CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्रीगिरिधरगौरवम्

—सम्पादकः—

डा० शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

भूतपूर्व दरभंगानरेश से संमान ग्रहण करते हुए
म० म० श्रीगिरिधरशर्मा जी चतुर्वेदी

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

डा० [illegible] जी शुक्ल [illegible]
को सादर समर्पित

राजेन्द्र मोहन [illegible]
[illegible]
द्विवेदी.
[illegible]
२३।११।८२

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्रीगिरिधरगौरवम्

(स्वर्गीय महामहोपाध्यायश्रीपंडितगिरिधरशर्मचतुर्वेदानां कृते
विभिन्नरचयितॄणां पद्यरचनासंग्रहः)

—: संपादक :—
डा. शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः
साहित्यप्रवक्ता–प्राच्यविद्या धर्मविज्ञानसंकायः
काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी

प्रकाशन :
उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-अकादमी–सहयोगेन प्रकाशितः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

प्रकाशक :
उत्तरप्रदेशसंस्कृतअकादमीसहयोगेन प्रकाशितः

© डा. शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदी

प्रथम संस्करण १९८३ ई०

मुद्रकः
जयन्ती प्रेस एण्ड प्रकाशन
बी २/२६२ एच भदैनी
वाराणसी

मूल्यम् १५/-

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

भूमिः

[श्रीमन्तः पंडितकरुणापतित्रिपाठिमहाभागाः, अध्यक्षाः उत्तरप्रदेश-
संस्कृतअकादमी, वाराणसी]

तत्रभवतां पुण्यश्लोकानां वैदुष्यप्रवाह-
भासीकृतदिङ्मण्डलानां महामहो-
पाध्यायविरुदविभूषितानां पण्डित-
वरेण्यगिरिधरशर्मचतुर्वेदानां विषये
काले काले विदुषां हृदयोद्गार-
भूतपद्यानां "श्रीगिरिधरगौरवा" ख्योऽयं
ग्रन्थः संग्रहः, तेषां जयन्ती-
समारोहावसरे प्रकाशितो भव-
तीति ज्ञात्वा प्रमोदमनुभवामि ।
ते खलु चतुर्वेदमहाभागाः
भारतस्य कोणे कोणे संस्कृत-
विदुषां सुपरिचिता आसन् ।
तेषां विषये हृदयोद्गाररूप-
मिदं "श्रीगिरिधरगौरवम्"
पाठं पाठं विद्वांसोऽवश्य-
मेव प्रसन्ना भविष्यन्तीति कामयते

त्रिपाठिकरुणापतिः

वाराणसी गणतन्त्रदिवसः
१९८३

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

—पुरोवाक्—

मेरे स्वर्गीय पूज्य पिता म० म० पं० श्रीगिरिधरशर्मा चतुर्वेदी जी का जन्म सन् १८८१ में जयपुर में हुआ था। १९८१ में उनकी जन्मशती का आयोजन काशी-हिन्दूविश्वविद्यालय के मालवीय भवन में संपूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय के कुलपति जी की अध्यक्षता, संस्कृत विद्वानों के मार्मिक हृदयोद्गार, चतुर्वेदी महानुभावों की उपस्थिति से प्रारंभ हुआ। वर्ष भर में विचार गोष्ठियों के रूप में वाराणसी के विभिन्न स्थानों पर प्रतिमास क्रम से १२ गोष्ठियां सम्पन्न हुईं। स्वर्गीय चतुर्वेदी जी की सभी अप्रकाशित रचनाओं को शताब्दी वर्ष में प्रकाशित कर देने का उद्देश्य उनकी स्मृति में स्थापित 'श्रीगिरिधरशोधसंस्थान' द्वारा निर्धारित किया गया था। परन्तु शताब्दी वर्ष में केवल ६ ग्रन्थ ही मुद्रित हो सके। अर्थाभाव सर्वत्र बीच में आ ही जाता है। अनेक महत्त्वपूर्ण रचनाएं अभी प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं, जो सम्पादित अवस्था में विद्यमान हैं। पुस्तक सूची में उनका उल्लेख है।

देश के अन्य भागों, देहली, जयपुर आदि में भी डा० श्री मंडन मिश्र जी महोदय; तथा स्वर्गीय चतुर्वेदी जी के ज्येष्ठ पौत्र डा० ईश्वरप्रसाद चतुर्वेदी के प्रयत्नों से अनेक स्मरणीय आयोजन हुए, जिनमें भारत सरकार के गृह सचिव श्रीमान् टी० एन० चतुर्वेदी महोदय ने देहली और जयपुर के दोनों समारोहों में पधार कर अपने उद्गारों को व्यक्त किया। दो जगद्गुरु शंकराचार्यों ने अपने भाषणों से इन आयोजनों को सफल किया। राजस्थान के मुख्य मन्त्री महोदय ने स्वयं श्री चतुर्वेदी जी की प्रशंसा करते हुए जयपुर में उनके जन्मगृह के मार्ग का नाम करण "गिरिधरशर्माचतुर्वेदीमार्ग" घोषित किया। श्री चतुर्वेदी जी के ज्येष्ठ पुत्र श्रीमान् देवीदत्त जी चतुर्वेदी इन आयोजनों में उपस्थित रहे, उन्होंने महत्त्वपूर्ण संस्मरण भी प्रस्तुत किये। इन आयोजनों का आकाशवाणी तथा दूरदर्शन एवं समाचार पत्रों में पर्याप्त प्रकाशन हुआ।

लालबहादुरकेन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठ, देहली से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका "शोध प्रभा" का श्री चतुर्वेदी जी के लिए विशेषांक प्रकाशित हुआ। डा० मंडन मिश्र जी की प्रेरणा से डा० रुद्रदेव त्रिपाठी जी का "चतुर्वेदिचम्पूः" नामक काव्य भी प्रकाशित हुआ। राजस्थानसंस्कृतअकादमी की संस्कृत पत्रिका "स्वर मंगला" का विशेषांक भी श्री चतुर्वेदी जी के लिए प्रकाशित हुआ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी ने इस अवसर पर १५००/ रु० की राशि प्रेषित कर 'स्मृतिसमारोह' आयोजित करने की प्रेरणा दी। इसके लिए उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी के अध्यक्ष, माननीय पंडित श्री करुणापति जी त्रिपाठी महानुभाव को हमारे अनेक साधुवाद समर्पित हैं, उन्होंने प्रस्तुत पुस्तक के लिए भूमिका लिखने के हमारे निवेदन को भी स्वीकार किया। "श्रीगिरिधर गौरवम्", नामक कवितासंग्रह पुस्तक का संकलन अनेक वर्ष पूर्व ही हो चुका था। मेरे प्रिय छात्र, वर्तमान में श्री गंगानाथ झा संस्कृत विद्यापीठ प्रयाग में प्राध्यापक श्री डा० गोपराजु राम ने इसकी पाण्डुलिपि प्राय: १५ वर्ष पूर्व ही प्रस्तुत कर दी थी। उसके प्रकाशन का सुयोग अब उपस्थित हो सका। उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी के उत्साही कार्यकर्ता श्री चन्द्रकान्तद्विवेदी को भी हम इस अवसर पर अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए धन्यवाद देना चाहते हैं।

"श्रीगिरिधरगौरवम्" पुस्तक स्वर्गीय श्री चतुर्वेदी जी के लिए विभिन्न रचयिताओं, उनके पूज्यों, मित्रों, शिष्यों प्रशंसकों आदि के द्वारा विरचित रचनाओं का संग्रह है। पूर्व भाग तथा उत्तर भाग का विभाजन जीवन काल में विरचित सामग्री और स्वर्गीय होने के उपरान्त प्रस्तुत रचनाओं को दृष्टि में रखकर किया गया है। इनमें से अधिकांश रचनाएं पूर्व मुद्रित हैं। जयपुर महाराजा संस्कृत कॉलेज के अध्यक्ष पद से बीस वर्ष पदासीन रहकर अवकाश ग्रहण करने पर एक अभिनन्दन आयोजन अखिलभारतीयसंस्कृतसाहित्यसम्मेलन के बीसवें महाधिवेशन के साथ जयपुर के टाउन हाल में समस्त देश के मूर्धन्य संस्कृत मनीषियों के मध्य सम्पन्न हुआ था। "संस्कृत रत्नाकर:" नामक मासिक पत्रिका का "दर्शनाङ्क" श्री चतुर्वेदी जी को समर्पित हुआ था। श्री चतुर्वेदी जी के जीवन से सम्बद्ध प्रचुर सामग्री दर्शन विषयक प्रौढ़ रचनाओं के साथ उसमें प्रकाशित है। श्री चतुर्वेदी जी के अनेक आकर्षक चित्र उसमें उपलब्ध हैं। उनके गुरुओं और मित्रों तथा शिष्यों का सचित्र विवरण है। उस अभिनन्दन ग्रन्थ को प्रस्तुत करने का श्रेय जयपुर के विख्यात विद्वान् धर्मशास्त्रधुरन्धर श्रीमान् पं० वृद्धिचन्द्र जी शास्त्री, जो श्री चतुर्वेदी जी के प्रधान शिष्यों में थे, तथा विश्वविख्यात वैद्यप्रवर श्री जयरामदास स्वामी जी को प्राप्त है। आगे अनेक मित्रों के आग्रह से श्री चतुर्वेदी जी ने अपनी आत्मकथा भी साहित्य जगत् को प्रदान की, परन्तु वह अपूर्ण भी है, और अत्यन्त शिथिल अवस्था में बोलकर लिखायी होने के कारण सम्पूर्ण सूचनाओं का संकलन उनमें नहीं हो सका है, संकेत मात्र आ सके हैं। अपने प्रति लिखने का संकोच भी उसमें कारण है। परन्तु अन्वेषण से अबतक इतनी प्रचुर सामग्री एकत्रित हो चुकी है, जिसके परिशीलन से अबतक श्री चतुर्वेदी जी पर विभिन्न विश्वविद्यालयों से चार शोधार्थी

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

पी० एच० डी० उपाधि प्राप्त कर चुके हैं तथा उतने ही वर्तमान में शोधरत हैं। इस सामग्री को देखकर लगता है कि ऐसा व्यक्तित्व अनेक शताब्दियों के उपरान्त ही प्रकट हुआ। संस्कृत, धर्म, संस्कृति, विज्ञान, जनसंपर्क, संस्थानिर्माण, प्रकृष्ट तलावगाही पाण्डित्य, ६ घण्टे नित्य प्रति आराधना, संस्कृत हिन्दी मासिक पत्र प्रकाशन, सम्पूर्ण भारत का अनेकधा भ्रमण, ऐसे कितने ही आयाम हैं जो अत्यन्त कठिन है। समस्त धर्माचार्यों, देश नेताओं, राजाओं से एक साथ उनके निकट सम्पर्क थे। दो सहस्र पत्र उनके पत्र संग्रह में उपलब्ध हैं, जो उनके विराट् व्यक्तित्व के दर्शन कराते हैं। डा० विद्याधर गुलेरी जी अपने पितामह स्वर्गीय श्रीमान् पंडित चन्द्रधर, गुलेरी जी की जन्म शताब्दी के आयोजनों में उत्साह से लगे हैं, श्री पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी स्वर्गीय श्री चतुर्वेदी जी के घनिष्ट मित्रों में अग्रगण्य थे उनके अनेक पत्र संग्रह में उपलब्ध हैं। पत्र-व्यवहार प्रसंग में श्री विधाधर गुलेरी जी ने मुझे अपने स्व० पिता जी की विस्तृत जीवनी लिखने की प्रेरणा दी है। प्रोफेसर इन्द्र विद्यावाचस्पति जी ने अपने पिता श्री मुन्शीराम जी (सन्यास के अनन्तर स्वामी श्रद्धानन्द जी) की जीवनी लिखी है। श्री अमृतराय जी ने 'कलम का सिपाही' नाम से अपने पूज्य पिता, उपन्यास सम्राट् श्री प्रेमचन्द्र जी की जीवनी लिखी है। मुझे भी इन के अध्ययन से पर्याप्त प्रेरणा मिली है, सामग्री तो प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है ही। आशा है प्रकाशन की सुविधा और भगवान की कृपा होने पर वह महनीय कार्य सम्पन्न हो सके। 'आत्मकथा और संस्मरण' के प्रकाशन की प्रेरणा 'श्रीवैद्यनाथआयुर्वेदभवन' के प्रतिष्ठापक और संचालक वैद्यसम्राट श्रीमान् रामनारायण जी वैद्य महानुभाव ने दी थी। उसका व्ययभार उन्होंने वहन किया था। शताब्दी आयोजन में प्रकाशन कार्य की सहायता हेतु कलकत्ते के श्री बांगड़ट्रस्ट, जयपुर के श्रद्धेय स्वामी रामप्रकाश जी महानुभाव, काशी के श्री महन्त वीरभद्र जी मिश्र महानुभाव ने आर्थिक सहायता दी थी। शताब्दी के वाराणसी में आयोजन के लिए उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी के अतिरिक्त वैद्यसम्राट् श्री रामनारायण जी महाराजने अपने सुपुत्र श्रीमान् शिवनाथ शर्मा जी महानुभाव के द्वारा आर्थिक सहयोग प्रदान किया। इन सभी आदरणीय महानुभावों के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं। मेरे व्यक्तिगत तात्कालिक निवेदन पर आदरणीय देवर्षिकलानाथ शास्त्री जी जयपुर, श्रीमान् डा० रेवाप्रसाद जी द्विवेदी महोदय, श्रीमान् डा० जगन्नाथ पाठक जी, श्रीमान् डा० श्री नारायण जी मिश्र महोदय, श्रीमान् डा० कपिलदेव जी पाण्डेय प्रभृति महानुभावों ने श्री चतुर्वेदी जी के प्रति अपने उद्गार छन्दोवद्ध कर प्रदान किये।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सभी के प्रति सादर नमन। डा० मंडन मिश्र जी महोदय ने सभी प्रकार का संबल प्रदान किया, उनके निर्देश कार्य का सुख अलौकिक है। डा० ईश्वर प्रसाद जी चतुर्वेदी ने इस प्रकाशन के लिए अनेक वस्तुएं संगृहीत कर भेजीं, उन्हें अनेक साधुवाद हैं।

आशा है—यह "गिरिधरगौरवम्" विद्वानों को मनस्तोष प्रदान करेगा।

शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी
B 3/1 F. F.
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय;
वाराणसी

गणतन्त्र दिवस
१९८३

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

श्रीः

विषयसरणिः

पूर्वभागः

विषयः	लेखकः	पृष्ठांकः
आचार्यः	अनन्तश्रीगोवर्धनपीठशंकराचार्यचराः भारतीकृष्णतीर्थस्वामिपादाः	१
शोभितमूर्तिः	अनन्तश्रीज्योतिष्पीठाधीशचराः ब्रह्मानन्दसरस्वतीस्वामिपादाः	५
विग्रहवान् श्रुतिस्मृति-पुरावृत्तार्थशास्त्रव्रजः	श्रीपंडितदीनानाथशास्त्रिणः	६
वादिषु यस्याभिचारिता जयति	श्रीमाधवाचार्यस्वामिनः	८
भूरि शस्यताम्	कविशिरोमणिभट्टश्रीमथुरानाथशास्त्रिणः	८
गुणमन्दिरे	राजगुरुश्रीगोपीनाथद्राविडाः	
वन्द्यो गिरिधरो बुधः	आयुर्वेदमार्तण्डश्रीलक्ष्मीरामस्वामिनः	
चिरं सन्तु मुदे बुधानाम्	पंडितश्रीरामभवनोपाध्यायमहानुभावाः	९
गिरिधरशर्मा चतुर्वेदः	श्रीजीवनदत्तब्रह्मचारिणः	१०
स एष बहुमान्यः	श्रीमदखिलानन्दशर्माणः कविरत्नानि	१०
व्याख्यातधर्मः	पंडितश्रीगोपालदत्तशास्त्रिणः	
शास्त्रेष्वषेषेष्वहो वैदुषी	म० म० पं० श्रीपरमेश्वरानन्दशास्त्रिणः	११
निश्चयमनुष्ठातुं बुधा नो क्षमाः	श्रीपंडितसीतारामशास्त्रिणः	१२
धन्योऽस्ति भूमण्डले	श्रीपंडितबालकृष्णशास्त्रिणः	१४
विष्णुकल्पः	श्रीपंडितब्रह्मदत्तशर्माणः	१५
वाग्देवताविभ्रमः	श्रीपंडितरामचन्द्रशास्त्रिणः	१६
सन्तोषमश्वति चिरं नयनद्वयश्रीः	श्रीपंडितशिवकुमारशास्त्रिणः	१७
प्रेषितपत्रांशः	शास्त्रार्थमहारथिनः श्रीमाधवाचार्याः	१७
जयति गीष्पतिरेष सदः पतिः	श्रीपंडितशिवप्रसादभारद्वाजाः	१८
राजस्थानशिरोमणिः	सांगवेदमहाविद्यालयनरवरद्वारा	१९
धन्योऽसि	पंडितश्रीलीलाधरजोशीमहोदयाः	२०
भूतलमण्डनायिततमाः	वाराणसीसंस्कृतछात्रसंघः	२१

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

कीर्तिः सा भवताम्	पुरातनशिष्यवर्गः लाहौरस्थः	२२
पण्डितमंडनेषु	महाराजहोल्करमहाविद्यालयाभिनन्दनम्	२४
धन्यो गिरेर्धारकः	श्रीनरवरब्रह्मचर्याश्रमस्था गुरवश्छात्राश्च	२५
सुस्वागतमपास्तखेदानाम्	कलकत्तास्थसनातनधर्मावलम्बिनः	२५
आत्मा समुल्लासितः	काशीहिन्दूविश्वविद्यालयीया, अन्तेवासिनः अध्यापकाः अधिकारिणश्च	२७
रविवत्प्रकाशितः	आशुकवयः पंडितश्रीहरिशास्त्रिमहोदयाः	२८
ज्ञानं गिरिं यो धरति स्वहस्ते	श्रीमन्तः डाक्टरचन्द्रधरशर्माणः	३०
सम्मानपत्रं हि समर्पयामः	श्रीवैद्यनाथायुर्वेदभवनसंचालककार्यकर्तृगणाः	३०
आयुर्बलोल्लसितभारतभारतीकः	अभिमन्युपुस्तकालयसदस्याः	३१
विकचयतितरां मानसेन्दीवराणि	श्रीमन्तः देवनायक आचार्याः पडितराजश्रीराजेश्वरशास्त्रिद्राविडाः	३२
सा चातुरी चातुरी	नूतनबालकगणेशोत्सवमण्डलसदस्याः	३३
अश्रान्तः कर्मयोगे	देववाणीपरिषद, आचार्यपीठ-, बरेली	३४
धर्मज्ञो जगदुद्याने	श्रीहृषीकेशचतुर्वेदिनः	३४
स्वागतन्ते पूज्य, बुधवर,	हैदराबादनगरेऽभिनन्दनम्	३५
आदित्यस्त्वं प्रतापे	ऋषिकुलस्नातकमण्डलम्	३५
विद्वद्वरिष्ठं नुमः	हीरकजयन्तीसमितिः, देहली	३७

—उत्तरभागः—

तेषामलौकिकं पुण्यम्	राजस्थानमुख्यमन्त्रिणः श्रीहीरालाल-शास्त्रिमहोदयाः	३९
शर्मनृमणिः	श्रीपंडितरामकुबेरमालवीयमहोदयाः	३९
गुरु-प्रगीतिः	विद्याभास्करमणिशंकरवसन्तरामउपाध्यायाः	४१
पीयूषसम्भाषणाः	आचार्यश्रीनवलकिशोरकांकराः	४२
कोऽन्यः कर्तुमिहेश्वरः	श्री पं० रघुनाथप्रसादचतुर्वेदिनः	४२
मनस्सु रमतां सताम्	डा० श्रीनारायणमिश्रमहोदयाः	४४
धन्यं नूनमभूद् जगत्	श्री रमेशचन्द्रशुक्लाः	४५
चतुर्वेदिचम्पूस्थपद्यानि	डा० रुद्रदेवत्रिपाठिनः	४५
विद्वन्मणिरयमासीत्	देवर्षि कलानाथशास्त्रिणः	४७
गिरिधरं शर्माणमीडामहे	श्रीमन्तः डा० रेवाप्रसादद्विवेदमहोदयाः	४८
ख्यातनामा स लोके	श्रीमन्तः डा० जगन्नाथपाठकमहोदयाः	४९
नमोनमः	श्रीमन्तः डा० श्रीहर्षनाथमिश्रमहोदयाः	५०

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

	श्रीमन्तः डा० कपिलदेवपाण्डेयमहोदयाः	५०
यदा कदा सूते	विद्यावाचस्पतिश्रीप्रभुदत्तशास्त्रिणः	५०
का सत्कृतिर्नासादिता	श्रीमन्तः लक्ष्मीनारायणपुरोहिताः	५१
निगमरससिन्धुर्गिरिधरः	श्रीमन्तः वनमालीचतुर्वेदाः	५१
शर्वंभावं प्रयातः	श्रीमन्तः सबलकिशोरपाठकाः	५२
शार्दूलोपमगर्जनः	श्रीमन्तः बालकृष्णभट्टाः	५२
जगदेकविद्वान्	श्रीमन्तः दयाकृष्णपन्ताः	५३
दिल्ली मौनभाक्	कविरत्नम् श्रीमन्तः अमीरचन्द्रशास्त्रिणः	५३
प्रसन्नः	विद्यावाचस्पतिश्रीशशिधरशास्त्रिणः	५४
गिरिधरतरणिः	श्रीमन्तः रतिनाथझामहोदयाः	५५
सारस्वतक्रतुकरं सततं स्मरामः	श्रीमन्तः रामरूपपाठकमहोदयाः	
प्राणान्जहौ परिपठन्-		५७
शिवदत्तमन्त्रम्		
निधानं विद्यानाम्	श्रीमन्तः रामनारायणदत्तपाण्ड़ेयमहोदयाः	५७
गिरिधरशिशिरांशवे नतयः	श्रीमन्तः पंडितवटुकनाथशास्त्रिखिस्तेमहोदयाः	५८
विद्यावयोवृद्ध	श्रीमन्तः शिवजी उपाध्यायमहोदयाः	५९
दैवमपि नैव समीक्ष्यकारि	श्रीमन्तः कृष्णमोहनठक्कुरमहोदयाः	५९
गिरिधर !	श्रीमन्तः व्रजनाथझामहोदयाः	६०
शास्त्रार्थकण्ठीरवः	श्रीमन्तः रामगोपालशास्त्रिणः	६०
आसीन्मदीयः पिता	डा० शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः	६१
जग विदित	श्रीमान् बालराम जी साधु	६१
वेदव्यास ऋषि थे	श्री पं० राधाकान्तशास्त्री	६२
गुरुचरितम्	विद्याभास्करश्रीचन्द्रभानुशास्त्रिणः	६२

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

पूर्वभागः

शुभाशिषः

शुभाशंसनानि

अभिनन्दनानि

स्वागतानि

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

आचार्यः

[अनन्त श्रीगोवर्धनपीठाऽधीशचराः शंकराचार्याः भारतीकृष्णतीर्थपादाः]

[१]

धिग्राज्ञामखिलं बलं यदुपरि ब्राह्मं बलं वै बलम्
तत्प्राप्त्यर्थमुपेयुषोऽजनवनं हित्वा समस्तं सुखम्
अस्यात्युग्रतपःप्रभावगिरिमप्राप्तावनीशर्षिता-
ब्रह्मर्षित्व महामहिम्न उदितं माहात्म्यमत्यद्भुतम्

[२]

अपारसंसारनिजाख्यघोरसिन्धुं तरीतुं भवबन्धमुक्तिम्
लब्धुञ्च येनर्षिवरेण घोरा महात्मनाकारि महातपस्या

[३]

तत्तादृशर्षिप्रवराग्र्यगाधिभूसुदेवरातौदलसंज्ञमौनिपैः
प्रसादिते सौश्रवसाख्यगोत्रगे वंशोत्तमे त्रिप्रवरे प्रतिष्ठिते

[४]

जन्माप्त्वा जयपत्तने जयपुरक्षोणीशविद्वत्सदः
कण्युत्तंसपरम्परायुजि चतुर्वेदान्ववाये ततः
लब्ध्वा जीवनलालनामलसितात्पीष्टुः स्वकीयात्पितु-
र्विद्यां गोकुलचन्द्रनाममहितः पारम्परीणां लसन्

[५]

श्रीमन्माधवसिंहस्वीयाऽख्यस्य क्षमेशरत्नस्य
धर्मप्राणस्य क्षितिपानामादर्शभूतचरितस्य

[६]

संस्थानविद्वन्मणिरास्त योऽतुलस्तस्य स्ववंशस्थपरम्पराजुषः
श्रीकौशिकादेरनुरूपलक्षणः प्रचण्डविद्वानजनिष्ट वर्ष्मजः

[७]

विख्यातविद्वंशजनुः किशोरकस्तदर्हपाण्डित्यधुरं धरिष्यति
धर्मप्रचारस्य धुरञ्च वक्ष्यतीत्यनूदितार्थो गिरिधारिसंज्ञकः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

[८]

विद्वन्मण्डलमण्डनप्रवरसूवाराणसीपत्तने
न्यायाध्यापकविद्वदन्वयमणिश्रीबालशास्त्र्यास्यतः
श्रीगङ्गाधरशास्त्रिभिः शिवकुमाराद्यैः सतीर्थत्वतो
न्यायव्याकरणाद्यधीत्य सकलं विद्वन्मणे राजतः

[९]

श्रीलक्ष्मीनाथसंज्ञाद् द्रविडकुलजनेर्व्याप्तकीर्ति योऽध्यगीष्ट
साहित्यन्यायशास्त्रप्रमुखमधिजगे मैथिलाज्जीवनाथात्
विद्यावाचस्पतेः श्रीमधुमथनकृतो झाभिधात्सुप्रसिद्धा-
न्मीमांसाधर्मशास्त्राद्यथ खलु निखिलं गूढमध्यैष्ट तत्त्वम्

[१०]

इत्थं जयपुरसंस्कृतविद्यालयतो नयालिधारीणः
वैयाकरणाचार्यो व्याकृतिशास्त्रीत्युपाधियुग्मेन

[११]

हाटकपदकसमेतं भूषित आसीत्पुनः परीक्षातः
पञ्चाम्बुदेशविद्याविश्वस्थानादलब्ध शास्त्रिपदम्

[१२]

अधिगतविद्यः स्वां यो विद्यां चरितार्थतां नेतुम्
जयपुरलवपुरमायापुर्यादिगपाठशालासु

[१३]

आध्यक्ष्येण स्थित्वा विद्याधर्मप्रचारपद्धत्याः
सारल्यसारसीम्यां विद्येप्सूनां व्रजानुपाकुरुत

[१४]

इत्थं विद्याधर्मप्रचारनिरतं निरीक्ष्यामुम्
अस्मत्पूर्वाचार्यैः श्रीगोवर्धनमठाधीशैः

[१५]

विद्यावयस्तपस्याप्रमुखज्येष्ठैर्जगद्गुरुभिः
श्रीमधुसूदनतीर्थैर्विद्याशेवधिपदं व्यतारयंस्मै

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

[१६]

अस्माभिश्चास्य दृष्ट्वा विविधनयततिज्ञानसंबोधनादि-
प्रावीणीधर्मसेवानिरतधिषणतावाग्झरीमुख्यवित्तम्
अत्यन्तप्रीतचित्तैर्निरतिशयमुदा घोषयद्भिः स्वकीय-
स्वान्तस्वान्तस्थभावं विशदपदपदे मङ्क्षु मायापुरीस्थैः

[१७]

विद्यावाचस्पतिताव्याख्यावाचस्पतित्वनिजरूपे
स्पृष्ट्वाऽनायि निजात्मा प्रसन्नतायाः परां काष्ठाम्

[१८]

ततः प्रागेवांग्लक्षितिपतिसकाशादपि महा-
महोपाध्यायत्वं प्रकटितमभूदस्य विदुषः
तथैवाऽन्याः संस्था विविधपदवीः पस्पृशुरहो
रुचिज्ञा रोचिष्णुं कथमिव पदार्थं विजहतु

[१९]

भ्रान्तिकृन्तनकृते च साम्प्रतं शास्त्रकर्मनिरतस्वचेतसा
उद्यमेन महता निरन्तरं येन यत्नविततिर्वितन्यते

[२०]

इत्थं जगन्नायकवेददेवताधर्मोल्लसद्भारतदेशसेवया
योऽवाप्तकार्तार्थ्यतया विराजते क्षोणीधरोद्धारकशर्मसंज्ञकः

[२१]

अस्येश्वरामरधरामरदेशिकाङ्घ्रिश्रद्धाप्रमुख्यसुगुणव्रजसाहचर्यात्
रम्यामिमां नवमहार्णवमज्जनाढ्यां विद्यां विचिन्त्य विपरीतगुणैरलभ्याम्

[२२]

उक्तपदद्वयतोऽमुं वदर्हमानन्दतुन्दिलस्वान्ताः
श्रीमज्जगदधिनाथप्रसादरूपेण भूषयित्वाथ

[२३]

पुनरप्याचार्योचितसमस्तसल्लक्षणावलीभाजम्
आचार्यपदेनाद्यालङ्कुर्मोऽतिप्रमोदभरभरिताः

[२४]

आशास्महे यदद्यारभ्यास्तिकजनसभासु सर्वासु
आचार्यश्रीगिरिधरशर्मेत्याख्या जगत्प्रसिद्धा स्यात्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

[२५]

तत्तादृशस्य विदुषः परमस्य विद्याधर्मप्रियत्वमुखभूरिसुलक्षणानि
यो नाभिनन्दतितरामभिनन्दनार्हं लब्धावकाश इममद्य वयं न विद्मः

[२६]

विद्याधर्मप्रेमिभिरखिलैरनिशं यदीयविद्यायाः
यत्सौजन्यात्स्वेच्छानुरोधमग्राहि पुरुलाभः

[२७]

संस्कृतरत्नाकरमुखसंस्थाव्रातैरकारि सततमिदम्
अस्माभिश्च तथैव व्यधायि तदिदं विधित्स्यतेऽप्यनिशम्

[२८]

यावच्छक्यमगृध्नुताव्रतधराः सन्तोऽपि सन्यासिनो
धर्मार्थं गुणगृध्नवश्च भगवत्सेवालिकृद्गृध्नवः
यस्मात्समस्तत एतदीयसविधाद्धर्मेण याद्यावधि
सेवालम्भि तया प्रमोदभरितास्तृप्तिं त्विमो नो ततः

[२९]

आशिषः प्रयुञ्ज्महेऽभ्यर्थयाम ईश्वरीरीश्वरांश्च सर्वदा मुक्तिशक्तिसाधनम्
दीर्घमायुरामयैर्हीनमेव सन्ततं दातुमिष्टनिर्मलानन्दपूरपूरितम्

[३०]

सद्विप्रान्वयसंभवस्वतनुतां शास्त्रव्रजाधीतितः
सार्थीकृत्य च साम्प्रतं बहुविधग्रन्थालिनिर्माणतः
शश्वन्मङ्गलकांक्षिशिष्टजनताभीष्टोपकारावलीं
स्वाधीताखिलशास्त्रवस्तुनिकरैः सम्पादयन्तं मुदा

[३१]

उपक्रमपराक्रमप्रभृतिदिव्यसद्ग्रन्थवार्निधिप्रदसुधीप्रदप्रवणरम्यशैल्यञ्चितम्
उमाधवरमाधवप्रणयलब्धविद्योल्लसद्विलक्षणसुलक्षणप्रचयभूमभूषाधरम्

[३२]

किरिवरमुखरूपप्राणकान्तासपत्नीकरिवरवदनाम्बावाक्सवित्रीमुखाढ्यान्
हरिहरविधिमुख्यान्भूरिभक्त्यर्चयन्तं गिरिधरनिजसंज्ञं वित्प्रकाण्डप्रकाण्डम्

[३३]

अप्यसुहारिण्यापत्सुतरां सुतरा यदीयदययैषा
मृत्युविदारिकुठारस्वाख्या ललिता सदावताल्ललिता

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

[३४]

दीर्घायू रोगहैनीदृढतनुधिषणागीर्झरीस्वापतेया-
द्याकारां श्राणयित्वा जगदुपकृतिकृत्कृत्यकृत्यै समस्ताम्
सामग्रीमद्रिजाता जलनिधितनुजा वाच आत्मा सुकान्तै-
र्युक्ता देव्योऽवतैनं सततमभिरतं धर्मसेवाकदम्बे

[३५]

कर्मप्रजाभक्तिमार्गालिमिष्टं शश्वच्छ्रद्धोद्रेकसाम्राज्यपुष्टम्
स्वीयध्यानध्वंसिताशेषकष्टं त्रैलोक्यस्थाशिष्टशिष्टालिजुष्टम्

[३६]

करालकलिकल्मषोत्कलितकष्टकल्यन्तकं दुरन्तदुरितद्रुमोद्दहनदक्षवीक्षालवम्
शरीरमतिदार्ढ्यसत्सुतधनादिसर्वेष्टदं भयानकभवार्णवोद्भवभयावलीभञ्जनम्

[३७]

सनातनमुखोद्गतश्रुतिमुखोद्गतस्वात्मकं सनातनपदापकं सकलधर्मचूडामणिम्
सनातनसमाह्वयं दृढसनातनश्रद्धया सनातनमुपाश्रयन्भवतु भाजनं श्रेयसाम्

[३८]

नितान्तप्रेष्ठश्रीगिरिधरनिजाख्यस्य सुखभू-
शिरोरत्नत्वस्पृक्प्रचुरतरविद्याव्रजनिधेः
चतुर्वेदज्ञालीकुलभवशिरोभूषणमणे-
र्जगन्नाथो देयान्निरतिशयभव्यालिमनिशम्

शोभितमूर्तिः

[अनन्तश्रीसमलङ्कृताः ज्योतिष्पीठाधीशचराः ब्रह्मानन्दसरस्वतीस्वामिपादाः]

[३९]

पण्डितगिरिधरशर्मा शास्त्रगिरिं सन्ततं धृत्वा
आबाल्यमिष्टधर्मा न्यवारयद्धर्मविप्लवासारम्

[४०]

सद्विप्रगुणैरमलैः शोभितमूर्तिर्गिरां पूर्तिः
भारतगगनविताने परिस्फुरद्रत्नवद्भाति

[४१]

तुष्टा अमुष्य कृतिभिः कृतिभिर्वन्द्यस्य राजमान्यस्य
आशास्महे गुरूणां सन्तु शुभा आशिषः सत्याः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

[४२]

जित्वा विवादिवर्गं सेवितवान् यत्सनातनं धर्मम्
तेनानिशं प्रसदेद्विश्वात्मा धर्मगोप्ताऽस्य

विग्रहवान् श्रुतिस्मृतिपुरावृत्तार्थशास्त्रव्रजः

[श्रीपं०दीनानाथसारस्वतशास्त्रिणः, मुलतान]

४३

श्रीमाञ्जङ्गमसाहितीचय इह स्रस्तो दिवः सत्कवि-
रेवं विग्रहवान् श्रुतिस्मृतिपुरावृत्तार्थशास्त्रव्रज
आन्वीक्षिक्यथ काव्यसंहतिरथाऽपि व्याकृतिः श्रीमत-
श्चेतःश्रान्तिविनोदसद्म सुतरां नो संशयः कश्चन

४४

स्त्रीयोनिभ्रंशनिम्नताङ्कलयति ज्ञात्वा सरस्वत्यदः
प्रेप्सन्ती निजपूतपुंस्त्वमनिशं येते दृढं तद्विधौ
स्वर्गेऽसम्भवितामवेक्ष्य सुतरां स्त्रीत्वाऽकृतिव्यत्ययेऽ-
स्मल्लोकं समुपेत्य धीयुतभवद्रूपेऽवतीर्णा ध्रुवम्

४५

उर्वश्याद्यखिलाप्सरःप्रणयिनः शास्त्राद्युपेक्षापरान्
दृष्ट्वा श्रीधिषणो वरिष्ठधिषणो विष्णुप्रधानाऽमरान्
फल्गुं स्वां त्रिदशालयस्य वसतिं धीरोऽवसायासकौ
प्राप्त्यै स्वाऽधिजिगांसुशिष्यविततेर्भावत्करूपं दधौ

४६

व्यासो वेदपुराणकोविदवरो ज्ञात्वा चिरञ्जीव्यपि
नो दृश्योऽस्मि नृचक्षुषोरिति परं खेदं समाशिश्रियत्
स्वाहंन्तीपरिचायनाय तु भवद्रूपेऽवतीर्य ध्रुवं
वेदभ्रातृपुराणसङ्गतिपरोऽस्मिन् राजते विष्टपे

४७

सप्ताहस्य कृतेऽभवत् गिरिधरः कृष्णो ध्रुवं केवलं
पश्चाच्छ्रान्त इव स्वकीयमजहात्तन्नाम लज्जावशात्
आबाल्यात् कलयन्निमां 'गिरिधरे'त्याख्यां भवान् यौगिकी-
मश्राम्यन् सिततावहैश्च यशसा कृष्णं हहाऽजिह्रिपत्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

४८

कथं व्योमन्, नीलं त्वमसि दृशि नाकारमपि सद्
इति प्रश्ने मां तद् समुदतरदभ्रस्तनितवत्
स्वशिष्याणां ध्वान्तं निजपटुगिरोद्धूय तरसा
ततः प्राहैषीन्मां प्रति बुधवरः श्रीगिरिधरः

४९

मेघानप्राक्षमेवं रसितमिदमहो शिक्षिताः केन यूयं
ऊचुस्ते पृच्छक ! श्रीगिरिधरमुखतोऽशिक्षि तद्वक्तृतायाम्
यर्हि व्याख्यानमञ्चे स वसतिमुररीकृत्यगम्भीरवाचा
व्याचष्टे द्यामुपेतां तदभिहितगिरं धारयामो वयं ताम्

५०

शास्त्रार्थेऽनृतवादिवादिरमणीकल्पा गिरां संहृति-
र्गर्भं स्रावयति स्वकं बत भयाच्छ्रुत्वाऽभवत्स्फूर्जथुम्
तस्यास्तत्र कुतर्कसूनुजननं त्वाकाशपुष्पायितं
स्वस्याः प्रत्युत जीवनेऽप्यतितमां शङ्कोद्भवत्यञ्जसा

५१

विद्याभूषणमस्ति कीर्त्यत इदं पुंसां कृते संसृतौ
किन्तु श्रीमति नैतदुक्तवचनं सार्थं वयं मन्महे
विद्यैवाप्य चकास्ति भूषणनिभं श्रीमन्तमेतत्स्फुटं
किं भूयः कथनेन वर्णनभृताऽऽत्मेवास्ति नूनं भवान्

५२

बाणो दण्डिमयूरभारविजगन्नाथो मुरारिः कवि-
र्भासो माघसुबन्धुहर्षकलिताः श्रीकालिदासादयः
कालाद् भूयस ऐहलौकिकपदात्ते देवभूयं श्रिता
निर्विण्णास्त्रिदिवादलप्सत भवन्मस्तिष्कमन्तर्हिताः

५३

"नैकत्र सर्वो गुणसन्निपात' उक्त्या अमुष्या अपवादभूताः
वक्तृत्वलेखस्वरमाधुरीसद्रूपक्षमा सत्यचणा भवन्तः

५४

सम्राड् यदार्पिपदथापि महामहोपाध्यायेत्युपाधिमवते भवते सुविद्याम्
नैतेन वृद्धिमगमद्भवतो महत्वं तस्यैव किन्तु महिमा महितोऽस्त्युपाधेः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

५५

हरद्वारेऽकार्ष.द ऋषिकुलमदभ्राभ्युदयवद्
प्रकृष्टोन्नामश्चाऽकृत लवपुरे शास्त्रनिचयम्
समध्युष्येदानीं जयनृपतिधानीं ननु भवान्
व्यधात्तत्सद्विद्यालयमपि सुविद्यार्थिसहितम्

वादिषु यस्याभिचारिता जयति

[श्रीमाधवाचार्यस्वामिनः तिरुपतिवालाजो]

५६

वाधोविनामरूपं षण्णां वर्गे विरोधिता स्वार्थे
सत्प्रतिपक्षोऽसिद्धिर्नमनेऽनैकान्तिको विषये

५७

अनवस्था वैदुष्ये चक्रकमाभाति पौरुषार्थेषु
परवादेऽसम्बन्धः प्रज्ञाऽऽचारेषु साङ्कर्यम्

५८

वेदविवेकेऽद्वैतं वादिषु यस्याभिचारिता जयति
स श्रीगिरिधरशर्मा धर्मोन्नत्यै चिरञ्जीव्यात्

भूरि शस्यताम्

[कविशिरोमणिभट्टश्रीमथुरानाथशास्त्रिणः जयपुरम्]

५९

साहित्यादिमार्मिकोऽथ दर्शनविमर्शवहो
महामहोपाध्यायादिविरुदोऽयमिष्यताम्
रत्नाकरवाही महाकाव्यसंग्रहादिपरः
प्रायशः प्रवासी वक्तृतार्थेऽयाद्यशस्यताम्
ग्राहिलः कदाचिदेव सरलस्मिताऽस्यःसदा
कार्यशतव्यापृतः सुदीर्घान्हिको दृश्यताम्
वेदोदितविज्ञानप्रकाशनेष्वखेदोदयो
गिरिधरशर्मचतुर्वेदो भूरि शस्यताम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गुणमन्दिरे

[राजगुरुश्रीगोपीनाथद्राविडाः, जयपुरम्]

६०

गिरिरुपलसमूहः पामरे तद्हरत्वं विदुषि भवति किं तत् सम्भवत्येकदाऽपि
इतरजनदुरापां वाग्मिवर्यो भवान् यद् धरति गिरमुदारां गीर्धरस्तन्मतो मे

६१

विद्याविलासवसतौ सततोल्लसदिन्दिरे
चतुर्वेदिकुलाम्भोधिचन्दिरे गुणमन्दिरे

६२

निगमाऽगमतत्वज्ञे बुधे गिरिधराऽभिधे
तद्गुणाकृष्टमनसा गिरां गुम्फोऽयमर्पितः

वन्द्यो गिरिधरो बुधः

[आयुर्वेदमार्तण्डश्रीलक्ष्मीरामस्वामिनः, जयपुरम्]

६३

अगाधशब्दपाथोधिः सहसा चुलुकीकृतः
लोकोत्तरधिया येन वन्द्यो गिरिधरो बुधः

चिरं सन्तु मुदे बुधानाम्

[पं० श्री रामभवनोपाध्यायमहानुभावाः, काशी]

६४

महामहोपाधिजुषां बुधानां विद्यालयाध्यक्षमहोदयानाम्
आकर्ण्य विश्रान्ति महोऽतिखिन्ना जुगुप्सते कालगतिं विदाली

६५

संपाद्य योग्यान् बहुशिष्यसंघान् सञ्चार्य लोकोत्तरकीर्तिराशिम्
विधातुमन्यत्किल कार्यमर्च्यं विश्रान्तिमार्याः किमु संभजन्ते

६६

पूर्णायुषः पूर्णमनोरथाश्च संस्थाप्य वंश्यान्हरिभक्तिनिष्ठान्
प्रसारयन्तो यशसां हि राशिं मान्याश्चिरं सन्तु मुदे बुधानाम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गिरिधरशर्मा चतुर्वेदः

[श्रीजीवनदत्तब्रह्मचारिणः, नरवर]

६७

पक्षं यस्य च पक्षपातरहितं सद्युक्तिपूरैः परं
पूर्णं पूर्णविपक्षिणोऽपि समितौ प्रेक्षावतां प्रेक्षकाः
संप्रेक्ष्याथ परस्परं सुमनसः प्रोत्सारयन्तो भृशं
मात्सर्यं परिमन्वते निजमनो मग्नं प्रमोदाम्बुधौ

६८

दिव्यां दिव्यसुवर्णमञ्जुलपदालङ्काररम्यध्वनि
कुर्वाणां जनमोहिनीमनुभवन्देवीं गिरां कामपि
श्रीमानार्यमुनिर्बुधो गुरुकुले वादे प्रवृत्ते स्वयं
स्तौति स्मेत्यपरोऽयमेव भुवने वाचस्पतिर्मूर्तिमान्

७९

ब्राह्मं भारमनन्तपारमपरं धत्ते च सारस्वतं
वास निर्मलमानसे सृजति योऽजस्रं बुधानां सताम्
हंसस्यात्र च तस्य सुन्दरतनोः पक्षद्वयं शोभनम्
संश्लाघेत न को बुधोऽनवरतं पुण्यं नितान्तप्रियम्

७०

षट्शास्त्रतत्ववेत्ता सोऽयं निवहन्प्रकाण्डपाण्डित्यम्
जीयादाचन्द्रार्कं गिरिधरशर्मा चतुर्वेदः

स एष बहुमान्यः

[श्रीअखिलानन्दशर्मणः कविरत्नाः अनूपशहर]

७१

यस्यावदातकीर्तेः स्वनामधन्यस्य भव्यवृत्तस्य
अभिनन्दनोत्सवोऽयं यथावदद्य प्रवर्तते लोके

७२

यस्यानवद्यमूर्तेः स्वधर्मनिष्ठस्य धार्मिके संघे
धर्मप्रवर्तनार्थाः प्रकर्षगर्भा भवन्ति सन्देशाः

७३

वेदोदितं पुराणैः समर्थितं यः सनातनं धर्मम्
विस्तारयांबभूव स्वतर्कवादैरपास्तदुस्तर्कः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

७४.

दर्पादुपागतानां मतानि वादे विजित्य येनात्र
व्यर्थीकृताः प्रकामं समाजवादाः कुतर्कभूयिष्ठाः

७५

सद्यः प्रलोभनार्था गवेन्द्रवाचो निपीय येनालम्
धिक्कार एव तस्मै यथावकाशं समर्पितः साक्षात्

७६

वाराणसेयविद्वत्समाजमध्ये विमर्दितं येन
नाद्याऽपि शर्म लेभे गवेन्द्रचक्रं मदान्धपरतन्त्रम्

७७

वर्णाश्रमस्वराज्यप्रवृत्तसंघं महानुभावो यः
सस्थापयाम्बभूव प्रधानभावेन भारते वर्षे

७८

साङ्केतिकैः स्वशब्दैरर्वाणि यस्यातिवर्णनं वृत्तम्
जयपुरनगरनिवासी गिरिधरशर्मा स एष बहुमान्यः

व्याख्यातधर्मः

[पं० श्रीगोपालदत्तशास्त्रिणः]

७९

सच्छास्त्रो जयपत्तनस्य सुषमाहेतुः प्रियो धीमतां
साम्राज्याद्गुणमानलब्धमहितोपाधिःप्रशस्तःश्रिया
सोऽयं सार्थकमुच्चकैरिह चतुर्वेदोपनाम स्वकं
बिभ्रच्छुद्धयशाः सुधीर्गिरिधरः शर्मा पुरे राजते

८०

विद्यां प्राप्य गुरोर्व्यधान्निजयशो व्याख्यातधर्मःशुचिः
छात्राञ्छात्रगुणानथो बहुगुणानध्यापनेनाप्तधीः
स्वस्थाने जयपत्तनेऽद्य च महाविद्यालयेऽग्र्यो बुध-
स्तस्मादर्हति कं स्तवं गिरिधरः शर्मा न विद्वत्कृतम्

शास्त्रेष्वशेषेष्वहो वैदुषी

[म० म० पं० परमेश्वरानन्दशास्त्रिणः, लाहौर]

८१

एकमात्रेण पुत्रेण पित्रोः स्वकं येन नीतं वयः शैशवं सोत्सवम्
पाठशालां प्रविश्य स्वधीवैभवं संप्रकाश्यामितं सद्यशः ख्यापितम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

८२

प्राकरोद् यः परीक्षासु दिग्विश्रुतान् पण्डितानुत्तमैः स्वोत्तरैर्विस्मितान्
यः सहाध्यायिषु स्वेषु कीर्त्यासमदं सर्वदा प्रापदग्र्यं पदं शर्मदम्

८३

यस्य शास्त्रेष्वशेषेष्वहो वैदुषी धर्मचर्याविधौ निस्तुषा शेमुषी
येन विद्योदधेर्वेदविद्भूपतेर्वेदमर्माखिलं प्रापि वाचस्पतेः

८४

माथुरप्राकृते संस्कृते वा कृतं यस्य काव्यं सुधास्वादु सद्भिर्नुतम्
प्रित्र्यपैतामहं रिक्थमासादितं येन सामर्थ्यमेतत् कवित्वेऽद्भुतम्

८५

यः समज्यासु विद्यावतां भूरिशः प्राज्यमाजीजनद् वाग्मिताभिर्यशः
प्रोच्छलद्वेदवादच्छला मानिनो यस्य तर्कैर्हता नैकशो वादिनः

८६

वर्णधर्मध्वजध्वंसने सक्षणं तर्कवर्षोपलक्षेपविद्याचणम्
इन्द्रमुत्सिक्तमुत्सेकशून्यं व्यधात् वेदगोवर्धनोद्धारणाद् यः क्षणात्

८७

कर्णधारं यमासाद्य लब्धोदयं देवभाषासुसाहित्यसम्मेलनम्
मासिमास्युच्चयन् रस्यरत्नाकरं योऽतिशेते विधिं क्षाररत्नाकरम्

८८

मुख्यमाचार्यकं प्राप्य संस्थासु यः प्राचिनोत् प्राच्यविद्यानिधिं निर्भयः
यस्य गायन्ति शिष्याःप्रशिश्याश्च तान् दिग्विदिग्वासिन श्रद्धया सद्गुणान

८९

वेदवित्सच्चतुर्वेदवंशोद्गतेस्तस्य विद्याप्रदातुर्भुवोऽलङ्कृतेः
अङ्घ्रियुग्मे गुरोः शिष्यकल्पाङ्घ्रिपे भक्तिपुष्पाञ्जलिः श्रद्धयैषोऽर्प्यते

निश्चयमनुष्ठातुं बुधा नो क्षमाः

[श्री पं० सीतारामशास्त्रिणः]

९०

किं न्यायाम्बुधिमन्दरोऽयमथवा वेदान्तचिन्तामणिः
किं वा काव्यकलाकलापकलनाकल्लोलिनीवल्लभः
किं स्वित् सांख्यसरोजसुन्दरवनीव्याकोचकोकप्रियः
किं नूनं स्मृतिशास्त्रसारविदुरश्रेणीशिरोभूषणम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

९१

शेषाशेषविशेषशासनवनस्वच्छन्दसञ्चारणा-
पञ्चास्यः किमु पूर्वतन्त्रतरणीसञ्चालनानाविकः
किं काणादपयोधिपानघटजः किं योगशास्त्रार्णवः
इत्थं यत्र विकल्प्य निश्चयमनुष्ठातुं बुधा नो क्षमाः

९२

सोऽयं सद्गुणशेवधिः सुविदितो व्याख्यानवाचस्पति-
र्वादीन्द्रद्विपराजशासनसृणिर्गम्भीरतासद्गुरुः
धर्मध्वंसिधुरंधगान्धतमसप्रोत्सारणाहस्करो
विश्वख्यातविदांवरो गिरिधरः शर्मा समुज्जृम्भते

९३

यत्पाण्डित्ययशोहिमांशुरनिशं सम्पूर्णतामाश्रयन्
विद्वन्मानसकैरवालिकलिकामुत्कोचयन् सर्वदा
तन्वानो विविधां चमत्कृतिततिं नक्तन्दिवं दीप्यते
सोऽयं पण्डितभास्करो गिरिधरः शर्मा चिरं राजताम्

९४

यो व्याख्यानपटुर्यमाहुरपरं मिश्रं नु वाचस्पतिं
येन प्रोज्ज्वलमस्ति भारतमिदं यस्मै जगत् श्लाघते
यस्मान्नास्ति परः परोपकृतिकृत् यस्यास्ति धर्मो धनं
यस्मिन् पण्डितलल्लजोऽपि बहुधा संशय्य सन्तिष्ठते

९५

स श्रीमान्नवनीतिरीतिनिपुणः षड्दर्शनीवापिका-
हंसो भूसुरवंशभूषणमसावंशो नु वागात्मनः
भ्रंशो वादिजयश्रियोऽयमपरो ध्वंसस्तु पाखण्डिनां
कंसारिप्रणयी परो गिरिधरः शर्म्माऽभिनन्द्यो न कैः

९६

यस्मिन् गर्जति सिंहवत् प्रतिसभं गम्भीरतारस्वरं
दायानन्दमतावलम्बिनिकरो जम्बूकवत् प्लायते
यश्चौद्दण्ड्य विखण्डनोऽखिलकलक्रीडागृहं तर्कवित्
चूडारत्नमसौ गुरुर्गिरिधरः शर्म्माधिकं भ्राजताम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

धन्योऽस्ति भूमण्डले

[पं० श्रीबालकृष्णशास्त्रिणः, टिहरी, गढवाल]

(९७)

विद्यानवद्यचरितान् गुणकर्मवृद्धान् विद्वद्वरान् गिरिधरान् जयपत्तनस्थान्
वन्दामहे शमितसंसृतिघोरतापान् ज्ञानोपदेशनिपुणान् बुधवृन्दवन्द्यान्

(९८)

यस्याद्य शारदसुधांशुचयप्रगल्भाः सत्कीर्तयो जगदिदं सुविलङ्घयन्ति
विद्यानिधिं जगति कीर्तितसत्प्रतापं प्राप्तं सुचारुपदवीमभिनन्दयामः

(९९)

दोषेऽसम्मुखता गुणेऽभिमुखता पापे सदा भीतता
शास्त्रार्थेऽभयता बुधे विनयता विद्यासु तत्त्वज्ञता
धर्मे धार्मिकता कृतौ कुशलता व्याख्यानदानेऽपि सा
पूज्ये सर्वमिदं विभाति नितरां विद्यानिधौ गीर्धरे

(१००)

सद्विद्यासदनोऽवदातचरितश्चाज्ञाननिर्णाशकः
शिक्षारक्षणदीक्षितो गुरुवरः सद्धर्मरक्षाकरः
भूपालैः परिपूजितश्च परितः शिष्यैः शुभैः संवृतः
सोऽयं श्रीम०म० पण्डितो गिरिधरो धन्योऽस्ति भूमण्डले

(१०१)

श्रीमान् संस्कृतभारतीप्रियकरस्तत्पालनैकव्रत-
स्तत्प्रासारमहाध्वरस्य विधिवत्सम्पादने सादरः
लब्ध्वा राजति दुर्लभां च पदवीं यो शासनोच्चासनात्
वाग्मी सोऽद्य वचोभिरादरयुतः सम्भूष्यते सादरम्

(१०२)

ऋषिकुले जयपत्तनकेऽपि वा लवपुरेऽपि च धर्मसभासु वा
अयि गुरो ! तव कार्यसुकर्तृता किमु न साऽत्र परोपकृतेर्युता

(१०३)

यस्याद्य दिक्षु शरदिन्दुमरीचिगौरास्तन्वन्ति शिष्यनिवहा सुयशःपताका
पीत्वा तथा च वचनामृतसिन्धुभङ्गान् तृप्ता भवन्ति जनता विनता सभासु

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

विष्णुकल्पः

[श्री पं० ब्रह्मदत्तशर्माणः, भुसावल]

(१०४)

वेदवेदाङ्गषट्शास्त्रवित् कर्मठः प्राच्यवेदोक्तधर्मोपदेष्टा सुधीः
जीवतुल्यो मतौ विष्णुकल्पः कृतौ नम्यते श्रीचतुर्वेदवर्यो गुरुः

(१०५)

व्याख्याताऽयं स्निग्धगम्भीरशब्दः टीकाकारोऽध्यापको ग्रन्थकर्ता
निष्पक्षश्चादर्शसम्पादकः सोऽस्माभिर्वन्द्यः श्रीचतुर्वेदमूर्तिः

(१०६)

काले काले शत्रुभिर्दूयमाने धर्मेऽनादौ पूज्यवर्णाश्रमाख्ये
प्रान्ते प्रान्ते योऽकरोत्सत्प्रचारं संस्तोतव्यां जागृति नम्यतेऽसौ

(१०७)

श्रुतिनिगदितधर्मस्य प्रचारः कथं स्यादनिशममरवाचोयस्य चिन्तास्ति चित्ते
विमलविपुलबुद्धिः कोविदानां वरेण्यो जयति गिरिवरोऽयं श्रीचतुर्वेदवर्यः

[१०८]

ब्राह्मं वर्णयता सभासु विमलं धर्मं च वर्णाश्रमं
शास्त्रार्थेषु पराजिताश्च विदुषा मीमांसका आर्हताः
तर्कैः साम्यसमाजवादपथिकास्तूष्णीकृता नास्तिका-
स्तं वन्दे बुधवृन्दवन्दितमहं भक्त्या चतुर्वेदिनम्

[१०९]

अथ सनातनधर्मसुकैरवं कलुषितं भुवने पिशुनद्विपैः
विकसितं कुरुते सकलप्रियो गिरिधरद्विजराजमहोदयः

[११०]

भवति नास्तिककौशिकदृक्क्षतिः सुजनमानसपद्मविकस्वरम्
अपि च नश्यति तापतमो भृशं गिरिधरप्रतिमस्तपनोदये

[१११]

धन्योऽसि भारत ! कलौ प्रतिकूलकाले प्राच्यं त्वदीयविभवं निगमागमाद्यम्
लोकोत्तरं गिरिधरप्रमुखाः सुतास्ते संरक्षयन्ति खलु तं परिवर्धयन्ति

[११२]

अज्ञा निन्दाप्रवीणा अयि विबुधगिरे त्वां मृतामालपन्तः
पश्यन्तून्मील्य चक्षुर्गिरिधरवदनप्राङ्गणे हृद्यशब्दाम्
सालङ्कारामदोषां मधुरकलरवां वादयन्तीं सुवीणां
नृत्यन्तीं भावरम्यां निखिलजनमनोहारिणीं तारणीं नः ॥

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

[११३]

समग्रशास्त्रेषु विलक्षणत्वमकुण्ठिताञ्च प्रतिभां दधानः
श्रीशङ्कराचार्य उदग्रकीर्तिधृतावतारो गुरुरेष वा स्यात्

वाग्देवताविभ्रमः

[श्री पं० रामचन्द्रशास्त्रिणः जयपुरम्]

११४

गुणगणपरितुष्टैर्मानिताः सार्वभौमैर्गिरिधर इति लोके कीर्तिता अप्यजस्रम्
मनुजहृदयजाड्याऽद्रीन् दलन्तः स्ववाक्यैर्द्विजकुलमणिभूताः पण्डितेन्द्रा जयन्ति

११५

देशो भारतवर्ष एष नितरां धर्मप्रधानश्चिरा-
दद्यत्वेऽपटुबुद्धिभिः कुतनयैः संपीडितोऽधर्मतः
यत्सूनु जयपत्तने गिरिधरं श्रीमन्तमासाद्य वै
स्वात्मानन्दसुनिर्वृतो वितनुते सद्धर्मकेतून्पुनः

११६

आम्नायार्थमवेत्य निश्चतधिया कारुण्यपूर्णः सुधी-
र्लोकान् विभ्रमधारिणोऽनतिचिरान्मार्गं परं दर्शयन्
सूक्तैः सर्वहितैः स्वकीयवदनादुच्चारितैः सर्वतो
ब्रह्माणं परितोषयन् विजयते सोऽयं द्विजेन्द्राग्रणीः

११७

वेदार्थप्रतिपन्थिनो बहुजनाः संगत्य मोहावृता
वादार्थं रविणेव वारिदगणाः प्राप्ताः समाटोपतः
तान् सर्वान् बहुशः क्षणाद्विघटयन्नेको हि संक्ल्पयन्न-
स्मत्पूज्यतमो बुधो विजयते वाग्देवताविभ्रमः

११८

एतत्प्रभावमतुलं प्रविचिन्त्य धीरा न्यायाधिकारपदमुच्चतमं दधानाः
व्याख्यानमस्य गुरुवाग्विभवस्य सम्यक् श्रोतुं नियुक्तसमये न समागताः किम्

११९

शब्देऽपरो त्रिनयनः शिव एव साक्षाद् साहित्यकैरवविकासपरः सुधांशुः
षट्शास्त्रकाननविहाररतो मृगेन्द्रः सोऽयं चिरं भवतु भारतभाग्यदीपः

१२०

बालत्व एव गुरवः प्रतिभाप्रभावात् यं मन्वते स्म धिषणं सकुशाग्रबुद्धिम्
तं साम्प्रतं निखिलभारतपूज्यपाद वन्दे गुरुं प्रणतकामदुघं प्रसन्नम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

सन्तोषमञ्चति चिरं नयनद्वयश्रीः

[श्री पं॰ शिवकुमारशास्त्रिणः, शाहाबाद]

१२१

न बालो वृद्धो वा न च युवजनो दृष्टिपथिकः
न यो जानीते वः सुरभियशसा पूर्णचरितम्
बताऽस्माकं पुण्यं मुदितमिह नूनं तनुजुषाम्
यतः प्राप्ता यूयं सकलजनहर्षं जनयितुम्

१२२

सत्य निशेयमिह नो रुचिरप्रभाता जाता प्रतीप उदितं ननु पूर्वपुण्यैः
अत्रागतान् समवलोक्य बुधाग्रगण्यान् सन्तोषमञ्चति चिरं नयनद्वयश्रीः

१२३

नारायणस्य वसतिः प्रथिता पयोधौ सर्वेषु शास्त्रनिचयेषु मुनीन्द्र आपो-
नारा इति स्मृतिमथो मनुरप्यवोचन्नाश्चर्यमद्य पुनरत्र भवन्निवासः

१२४

भवद्यशो वर्णयितुं स्ववाचा मूकायते देवगिराऽपि देवी
नेशोऽस्ति शेषोऽपि स्वयं प्रगातुं पुंसः कथा काऽनुगुणं गुणानाम्

१२५

हे धर्मशील, तव धर्मधुरन्धरस्य श्रुत्वा यशोऽतिविमल शरदिन्दुकान्ति
धर्मो विगायति चिरं रमणीयकायमास्थां करोति रुचिरे तव देहगेहे

१२६

अशेषदेशदर्शकः सुहृत्सुधाप्रवर्षकः
भवेदरिप्रघर्षकः प्रजामनःप्रहर्षकः

प्रेषितपत्रांशः

[शास्त्रार्थमहारथिनः श्रीमाधवाचार्याः, देहली]

[१२७]

युक्तं यस्य वचो हरिध्वनिनिभं यावन्न कर्णंगतं
तावन्नूत्नसमाजचारिकरिणो गर्जन्ति गर्वोद्धताः
प्रान्तेऽम्बालयसंज्ञकेऽस्ति नगरी डेराबसी विश्रुता
तस्यां धर्मसनातनस्य नितरां ह्रासः समुज्जृम्भते

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

[१२८]

दिघक्षुदावानलधूमधूसरच्छटातमस्काण्डविलुप्तचेतनाः
मृगा इवासन्निह विद्रुता वयमघर्मघर्म्मातिशयप्रपीडिता.

[१२९]

परम्भवत्यत्र पयोधरापतत् प्रभूत - सम्पातनितान्तनिर्भयैः
विपक्ष - पक्षक्षपणक्षमाक्षरा सुघोषणाऽस्माभिरदायि विद्रुहे

[१३०]

ततो भवन्नाम निशम्य तत्क्षणं
भिया व्यवेपन्त मनांसि विद्विषाम
अतो न शास्त्रार्थकृते कृता मतिः
स्वभाव एवैष सदार्य्यसंज्ञिनाम्

जयति गीष्पतिरेष सदः पतिः

[श्री पं० शिवप्रसादभारद्वाजः, देहली]

[१३१]

जयति मङ्गलमङ्गलकारणम्
गिरिधरोऽरिधरोऽरिधराहरः
जयति संस्कृतिसंसृतिसूः कला
जयति भारतभारतभारती

[१३२]

विबुधमण्डलमण्डनमण्डनः सुमनसां मनसां स्तुतये विधुः
सुवचसां वचसाञ्च परं पदम् जयति गीष्पतिरेष सदः पतिः

[१३३]

चरिकरीति यदाननपङ्कजे रतिमतिप्रणयात्सुरभारतो
सुवचनाऽमृतपानविमोहिता शशिमति जनदृष्टिचकोरिका

[१३४]

आचार्यः किल यः कवीन्द्रवचसां विद्वद्गणग्रामणी-
र्यो वा सत्कविताकलाकुलवधूसीमन्तसिन्दूरदः
साहित्याम्बुधिभावरत्ननिकरप्रोद्भासिसच्छेवधि
निस्तन्द्रेन्दुकलाविलासरुचिरो सौम्यां दधच्छेमुषीम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

राजस्थानशिरोमणिः

[साङ्गवेदमहाविद्यालयनरवरद्वारा]

[१३५]

श्रीविश्वेशपदारविन्दमकरन्दानामिदं वर्षणं
यल्लोके सुजनैः समागतिरिति प्राहुर्मुनीनां वराः
अद्यायं खलु धन्यतामुपगतो विद्यालयः संसृतौ
यत्रोदारचरित्ररञ्जितजनाः श्रीमन्त आयान्ति यत्

[१३६]

वर्णाश्रमाणां परिरक्षणाय प्रसङ्गतोऽत्रापि समागतानाम्
श्री साङ्गवेदाध्ययनालयोऽयं शुभागमं वो वितनोति नम्रः

[१३७]

छात्राः कोकनदा विकासमगमत् ध्वस्तं निराशातमः
सर्वत्र प्रसरत्यहो यदधिका प्रीतिः परा चन्द्रिका
मद्विद्यालयवारिधिर्वितनुते हर्षेण वृद्धिं निजाम्
तत्कश्चित् न हि संशयो यदधुना नूनं भवांश्चन्द्रमाः

[१३८]

व्याकृत्यादिसमस्तशास्त्रविशदप्राशस्त्यमासादयन्
विश्वेषां विदुषामुदारयशसां पंक्तिं स्वयं पावयन्
यो राज्याच्च महामहोपपदकोपाध्यायशब्दाश्रयो
राजस्थानशिरोमणिः स विपुलैः पुण्यैः पुरो वर्तते

[१३९]

आचार्यान् प्रतिवर्षमेव सृजतां विद्यालयान् रक्षताम्
साहाय्यैर्भवितां नयत्रुटिकरान् दण्डादिभिः शासताम्
ब्रह्मोपेन्द्रकपर्दितां गतावतां पूजा गिरा केवलं
रोहत्येव तिरस्कृतिः खलु तुलां बालोऽस्मि तन्मृष्यताम्

[१४०]

अहो युष्मत्कीर्तिः क्वचिदपि झवच्छीलशिशिरा-
घना प्रालेयाद्रेः सकलसुषमां तुन्दिलयति
प्रतापात्सन्तप्ता क्वचिदशिशिरांशोश्च भवतां
द्रवीभूय व्याजादमरसरितः सा प्रवहति

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

[१४१]

व्योमप्रसूनलसितैः शशशृङ्गवाद्यै-
र्वन्ध्योदरेषु जननं निजमाप्तवद्भिः
स्वीकृत्य सन्मधुरिमस्वरमष्टमाख्यं
मूकैरकीर्ति भवतामपकीर्तिवार्ता

[१४२]

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः
अर्पिता तेन देवेशः श्रीगिरिधरः प्रसीदतु ॥

धन्योऽसि

[पं० श्रीलीलाधरजोशी महोदयाः]

१४३

माध्वीकामृतवर्षिणी सुरगवी यस्य स्थिता मानसे
स्फूर्जत्काव्यकलाकलापकुशला माद्यन्ति यस्यां बुधाः
यत्पीयूषवचो निशम्य सुतरामज्ञाः सुविज्ञोत्तमाः
तस्य श्रीबुधवन्दितस्य विदुषे सम्मानतः स्वागतम्

१४४

लब्धं मानधने ! मनागपि पदं चित्ते यदि द्वेषिणाम
चित्रं नास्ति यदीयवाक्सुवनिता तेषां मनोहारिणी
सन्न्यासाश्रमवर्तिनोऽपि मनुजा यस्याः प्रभावान्विताः
किन्तेषां यदि हस्तिरागमरिका धन्योऽसि ते स्वागतम्

१४५

हे वादीन्द्रशिरोमणे, हृदयजाऽज्ञानौघविध्वंसक,
ध्यातस्त्वं निभृतं चिरादुपगतो शौरीव मे दर्शनम्
युष्मत्प्रेमसुधासरोवरजले गाढं मुदा मज्जिताः
प्रेमाह्लादभरैर्वचोभिरमलं कुर्मो वयं स्वागतम्

१४६

अनल्पधिषणावलेरखिलशास्त्रपारङ्गतेः
प्रकृष्टमुनिमानसं प्रखरसम्पदा शोभितम्
प्रचण्डभुजदण्डतो व्यथितधर्मविध्वंसकैः
समस्तजनरञ्जितं भवतु सर्वदा भारतम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

भूतलमण्डनायिततमाः

[वाराणसीसंस्कृतछात्रसंघः]

१४७

मुक्तामञ्जुलपद्गुणौघकिरणैरुल्लासितस्वान्वयाः
धर्मे शक्तिमतीं मतिं धृतियुतां संधारयन्तोऽनिशम
उच्चाः स्वीयगुणैर्महद्धिषणि ये नम्रा गुणैर्दक्षिणैः
सौख्यं श्रीगिरिधारिलालविदुषः संप्राप्नुयुर्भूतले

१४८

राजद्भूतलमण्डनायिततमा याऽऽसीत्पुरा सन्तति
सा कष्टं कलिकालकालकुटिलस्वान्तैर्मृतेत्युच्यते
श्रीमद्भिस्तु निजप्रसूसुतनयैः सा भारती भारता
स्वःस्थानन्दिसुशेमुषीनुतनयैः स्वस्थानमानीयते

१४९

रिक्ता दोषलवैरपि प्रियतमाः सर्वस्य भव्यैर्गुणैः
सद्विद्याऽध्ययनप्रकर्षजनितानन्तप्रभाभासुराः
आशाशालिशशाङ्कशुक्लयशसामाधारभूतात्मनो
विद्यान्तां सुकुलक्रमागतवतीं संपालयन्तोऽनिशम्

१५०

लाकारात्मकला देवचिन्तपरा आनन्दमग्नान्तरा
कुर्वन्तः सुखसन्ततिश्च शमतो लोकैः सदा पूजिताः
दीनानां परिपालकाश्च दयया पूर्णा स्वचेतोऽन्तराः
विद्वन्मौलिकुलालिपङ्कजकरा दीव्यन्त्वमन्दं भुवि

१५१

लोकेऽस्मिन्बहवो वसन्ति विदुषो जीवस्य जीवायिताः
तेषां किन्तु परोपकारमतयो द्वित्राः सुखं भुञ्जते
नैका गर्जनपूरितक्षितितला मेघाश्चरन्त्यम्बरे
अल्पा एव तु जीवयन्ति भुवनं वृष्ट्यात्मकादमृतात्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

१५२

हं हो स्वीयमहार्घकालसकलक्षेपेत्युपेत्यादरात्
आविर्भावित देवगी:स्थितदृढप्रेमोल्लसद्वैभवा:
राजद्वारतभारती सदुदयोदग्रप्रयत्नोद्यता:
हृद्यं स्वागतमद्य वो वितनुतेऽसौ च्छात्रसङ्घो मुदा

१५३

नाना शास्त्रगनूतनामृतरसास्वादैकरक्तान्तरा:
विद्वद्वृन्दवराग्रगण्यविबुधैरत्यन्तमासेविता:
नाना वेदतदङ्गसङ्गसहितस्वोच्चै:श्रव:शोभिता:
नाकं नाकमितं जयन्ति सुखदा: श्रीपूज्यपादा भुव:

१५४

गन्धर्वादिभिराद्यभक्तिभजनैर्भूय: स्तुतौ भाविता:
भर्ता भूतिभरप्रदोभयभयन्त भस्मभावं नयन्
अङ्गालिङ्गितभूरिभूतिरभवो भव्यो महाभाग्यद:
भूतेशो भगवान्भवो वितरतात् त्रैलोक्यलोकान्सुखम्

१५५

रक्षो हन्तृवरं सुखस्य भवनं श्रीरामचन्द्रं परं
देवं भक्ति भृतोऽहमार्यवचनै: संप्रार्थयाम्यादरात्
यन्नो पूज्यतमा कुटुम्बसहिता विद्वद्वरा आगता
नित्यं सर्वसुखानि सन्तु जगत: कीर्तिं लभन्तामिति

कीर्तिः सा भवताम्

[पुरातनशिष्यवर्ग:, लाहौर]

१५६

प्रत्यूहव्यालबर्ही दुरितगुरुतरोषबुंधाम्वुप्रयोग:
पैशून्याम्भोध्यगस्त्यो मदझषबडिशं कामशत्रो: कुठार:
लोभध्वान्तोष्णरश्मि: क्रुधिभपृथुसृणिर्मन्दरो दैन्यसिन्धो:-
र्मानाहं: को विदेश: ? प्रथयतु भवतां भावुकं हृष्टिपातम्

१५७

वाग्देव्यञ्जनमृष्टकिल्बिषतमोबंहिष्ठवाक्पाटवा-
कूपारो यशसां पदं स भवतां जीव्याच्चिरं विग्रह:
यन्निर्णिक्तसदुक्तिमौक्तिकवरैरापूर्य हृत्पेटिकां
छात्राणां निकरस्तनोति भवतां सत्कीर्तिमभ्रङ्कषाम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

१५८

मत्या गीष्पतिमात्मवर्मविलसत्कान्त्या विधोर्मण्डलं
स्थैर्येणाद्रिपतिर्गिरा विधिवधूर्घृत्या च सर्वंसहा
लक्ष्म्या श्रीपतिरुच्चगर्वभरित. सत्तेजसा भास्करः
शान्त्या वीचिविहीननीरधिरघश्चेकीयते श्रीमता

१५९

कामस्यैव रतिः पुराणपुरुषस्यैवेन्दिरा सुन्दरी
शर्वस्येव शिवा प्रिया दिनमणेश्छाया विधो रोहिणी
इन्द्रस्येव पुलोमजा हुतभुज. स्वाहा विधेर्भारती
कीर्तिः सा भवतां दिगन्त विततात्यश्रान्तमासङ्गिनी

१६०

प्रीतिः सत्यपथे घृणाऽनृतसृतौ ग्लानिः परा किल्बिषे
संसक्तिः सुकृतेऽनुरक्तिरनिशं सर्वोपकारव्रते
सौजन्यं सुजने खले विमुखता दीने सुदूने कृपा
स्नेहश्छात्रगणे बुधेषु विनयश्चालोक्यते श्रीमताम्

१६१

मधुव्रतौघो विकसत्कुशेशयं चकोरसङ्घो द्विजराजमण्डलम
तृषार्तपान्थः सलिलं यथेक्षते तथा भवन्त निगमार्थिमण्डली

१६२

पञ्चाम्बुक्षितिमङ्घ्रिपद्मरजसाऽलङ्कृत्य दैवाश्रिता
श्रीमद्भिर्निहिता प्रचारसरणौ गीर्वाणवाणी भृशम्
निर्यन्नेजवचः पटुत्वविगलत्पीयूषधाराव्रजैः
सिक्तो ज्ञानमरुश्च रम्यविषयः पञ्चाम्बुमृष्टोप्ययम्

१६३

जगद्विदितरम्यपञ्चनदविश्वविद्यालये
प्रविश्य निजगौरवेण सुविपश्चिदालीजुषा
जरत्सुरगिरोऽनवस्करमवद्यपाठ्यक्रमं
निधाय भवता सता जगति कीर्तिराताऩिता

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

१६४

प्रत्यब्दं भ्रमणाकुलः क्षितितले विद्यार्थिसार्थो महा-
नन्तेवासमवाप्य याति भवतां पारं परीक्षोदधेः
येषामाश्रयतः प्रवृद्धिमयते कल्याणवारांनिधिः
तेषां कश्च कदा शुभोपकरणादानृण्यमस्माद्व्रजेत्

१६५

स्वोद्योगस्य फलं सनातननतस्यामर्त्यवाङ्मन्दिरं
पूर्वान् शिष्यगणान् विहाय च भवत्सच्छात्ररक्षाश्रितान्
पूजार्हाः ? भवतामिदं जयपुरप्रस्थानमाकस्मिकं
दुःखाम्भोधिगभीरलोलपयसामस्मान्क्षिपत्यूर्मिषु

१६६

आवश्यकं जयपुरे गमनं त्विदानीं
कार्यार्थमस्ति भवता हृदि निश्चितं तत्
तस्माद्वियोगभरमन्थरमानसाना-
मस्माकमद्य भणितुं सहते न वाणी

१६७

अन्ते सदैव करुणावरुणालयं तं सम्प्रार्थयाम उपकारपरं परेशम्
सन्त्यज्यते पुरमिदं भवता यदर्थं तत्पूरयेत्स भगवानखिलान्तरात्मा

१६८

किञ्चेदमद्य भवतां चरणाम्बुजेषु
सम्प्रार्थ्यते प्रतिपदं नमितोत्तमाङ्गैः
विद्यार्थिसंहतिरियं भवदेकनिष्ठा
विद्वद्वराः ? स्मृतिपथान्ननु नापनेया

पण्डितमण्डनेषु

[श्री महाराजहोल्कर-महाविद्यालयः, इन्दौर]

१६९

श्रीमत्सु मान्यवरपण्डितमण्डनेषु
सुस्वागतं गिरिधरेत्यभिधाधरेषु
ब्रूमो वयं जयपुरेन्द्रसभासुभूषा-
भूतेषु वैदिकसुधर्मधुरन्धरेषु

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

१७०

गीर्वाणवाग्गुणसुगुम्फनगौरवेषु
विद्यावदातहृदयेषु महाशयेषु
सम्राट्समर्पितसमानमहामहोपा-
ध्यायाभिधानगुणगौरवमण्डितेषु

१७१

विद्याऽऽलयोऽयमयि होलकरप्रपूर्णाम्
अद्याभिनन्दयति मान्यतमान्बुधेन्द्रान्

धन्यो गिरेर्धारकः

[श्रीनरवरब्रह्मचर्याश्रमस्थाः गुरवश्छात्राश्च]

१७२

लोके स्वीयमहोपदेशविषयैः सद्धर्मनीत्यादिकै-
र्व्याख्यानैर्विमलैः स्वकीयसुयशः सर्वत्र संवर्धयन्
श्रीमान् यश्च महामहोपपदकोपाध्यायतां सङ्गतः
सद्विद्यातिसुबुद्धिवैभवयुतो धन्यो गिरेर्धारकः

१७३

कुर्वन् स्वं नगरं महोन्नतमिदं यः श्रीयुतो राजते
स्वीयेनैष समस्तदिक्षु महसा ख्यातिं गतः सूर्यवत्
विद्वांसः कमलाकरा इव महच्छ्रुत्वा यशोऽस्यैवत-
च्चित्ते मोदमवाप्नुवन्ति सततं धन्यो गिरेर्धारकः

सुस्वागतमपास्तखेदानाम्

[कलकत्तास्थसनातनधर्मावलम्बिनः]

१७४

रसनाभ्यस्तनिखिलवेदानां ज्ञाननिरस्तवृजिनखेदानाम्
सुस्वागतमपास्तभेदानां गिरिधरशर्मचतुर्वेदानाम्

१७५

वहुजन्मार्जितपुण्योदयतो भवति भवादृशकृतिजनसङ्गः
येन भवाम्बुधितलपतितानां सञ्जायते दुरितव्रतिभङ्गः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

१७६

निगमागमसम्मान्यसनातनधर्मसमर्पितसर्वस्वानाम्
अभिनन्दनं वयं किं कुर्मस्तेजोलुण्ठितहरिदश्वनाम्

१७७

क्वेमाश्चुतसंस्कृतयो वाचः स्वरसंस्थानविचारविहीनाः
क्व श्रीमतां यशोमयगाथास्त्रिषु लोकेषु सदैव नवीनाः

१७८

शास्त्राम्भोनिधिमन्थननिःसृततत्वविचारमयैर्मणिरत्नैः
सम्पूजिता चिरं वाग्देवी तत्र भवद्भिरमन्दसुयत्नैः

१७९

पादरजोभिरनन्तविभावैः कश्मलवन्ति जगन्ति पुनन्तः
अन्तर्दूषितभावजनानां कल्याणाय भवन्ति भवन्तः

[१८०]

दिष्ट्याद्य चात्र भवताममलाशयानां
जातं शुभागमनमेतदतीव पुण्यम्
येनाञ्जसा विमलदर्शनजातहर्ष-
नित्योत्सुका वयमहो सुभृशं कृतार्थाः

१८१

निष्किञ्चना वयममन्दविभूतिभाजां
कां कुर्महे भगवतां भवतां सपर्याम्
भक्तार्तिनाशनपरेषु भवत्पदाब्जे-
ष्वेकां नमस्कृतिमथाऽपि समर्पयामः

१८२

धन्या भवन्तोऽखिललोकवन्द्याः
परोपकारार्पितसाधुभावाः
धन्या वयं चापि भवत्पदाम्भो-
रुहानुभावाप्तसमस्तकामाः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

आत्मा समुल्लासितः

[काशीहिन्दूविश्वविद्यालयीया अन्तेवासिनः, अध्यापकाः, अधिकारिणश्च]

१८३

महामान्याः !

जानश्रुतिरहस्यस्य सत्कर्माश्चितचेतसः
उपासितस्य धर्मस्य योगो भवति दुःखहा

[१८४]

येन नाराधितो धर्मो येन नोपार्जितं यशः
येन नाधिगतं तत्वं मोघमेव स जीवति

[१८५]

धर्मस्यायनकामनैकनिलयः सत्यानुरागोज्ज्वलो
विख्यातो विबुधाश्रयः सुरगवीसेवैकसरम्भवान्
मिथ्याज्ञानविमोहितं नरमनायासेन गीतामृतं
सोत्साहं परिपाययन् गिरिधरो निःश्रेयसायास्तु नः

[१८६]

आभिः सप्तसमाभिरुत्तमतया व्याख्यानसारावलि-
मात्मोदग्रगुणात्मके प्रवचने मुक्तामिवग्रथ्नता
सर्वेषां श्रवणाभियुक्तमनसामेकावलीं बध्नता
सोत्कण्ठं ननु कण्ठभूषणमिषादात्मा समुल्लासितः

[१८७]

क्लेशावेषमशेषतो न गणयन् नो वा जराजर्जरं
कायं कार्यसमापनाक्षममहो सम्मानयंश्चालयन्
सानन्दं समतां सदा समुदयन्नर्कोपमः श्रीगृह-
प्रायं भक्तमनोऽरविन्दमतनोद् वाक्यप्रभोद्भासितम्

१८८

भव्यं भारतगौरवास्पदतयाख्यातं सुविद्यामृतं
गीतातत्वमुदारया मधुगिरा त्वत्तो निपीयादरात्
श्रोतारः सकृपा सभक्ति भवतामायुर्वयोवर्धने
याचन्ते करुणाकरं सुखकरं मृत्युञ्जयं शङ्करम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

रविवत्प्रकाशितः

[आशुकवयः पं० श्रीहरिशास्त्रिमहोदयाः, जयपुरम्]

१८९

लब्धोदयो गोकुलचन्द्रनाम्नः कवीश्वरान्माधवसिंहकाले
सम्प्राप्तविद्यश्च महर्षिलक्ष्मी–जीवाभिधाभ्यां बुधपुङ्गवाभ्याम्

१९०

बाल्यादयं संस्कृतवाक्प्रवीणः शब्दागमे पूर्णकृतश्रमश्च
न्यायेऽपि तीक्ष्णप्रतिभो मनीषी, आचार्यनाम्नीं पदवीमवापत

१९१

क्रमाद्विवृद्धाभ्यसनो बुधेषु, वक्तुं समाभाषितुमुद्यतोऽभूत्
शास्त्रार्थचर्चाप्रथितो भवन् सन्, ख्यातिं परां प्रापदिति क्रमेण

१९२

सनातनं धर्ममुपाश्रयन्, सन् सरस्वतीं मातरमाश्रयन् सन्
आर्यंब्रुवान् संसदि कम्पयन् सन्, दिने दिने ख्यातिमवापदुच्चैः

१९३

इह वहु विदितोऽभूदेष शास्त्रार्थकर्ता, बुधगिरिधशर्मा जान्हवीतीरसंस्थे
ऋषिकुल उपहूतोऽध्यापनार्थाय लोकैः कुलपतिपदमाप्तः काममस्थात् चिराय

१९४

अमरभणितिसेवी तत्समुत्थानमिच्छुर्विविधललितलेखैः पत्रसम्पादकोऽभूत्
जयपुरनगरीतोऽप्येकरत्नाकराख्य, प्रकटितममुनैव स्वीयसम्पादकत्वे

१९५

नवनवनवलेखा चारुपत्रे मनोज्ञाः सहृदयरमणीया आगताश्च प्रकाशम्
समुपकृतमनेन प्रायशो देववाण्याः कुहचिदपि फलन्ति ज्ञावतां सुप्रयोगाः

१९६

ततश्च लाहौरपुरे सनातने विद्यालयेऽध्यक्ष पदं प्रपन्न
स्वकीयपाण्डित्यकलाकलापैः साश्चर्यसम्मानमवापदेषः

१९७

तत्रैव कर्मप्रवणं तमेनं, निशम्य राज्याधिकृतो ह्युदाराः
सम्राज आविर्भवलक्षितोत्सवे, महामहोपाधियुतं व्यकार्षुः

१९८

ततः प्रभृत्येष महानुभावो नानाविधग्रन्थविलेखलग्नः
पाण्डित्यपूर्णान्बहुशो निबन्धान् प्राकाशयच्छात्रविबोधनार्थम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

१९९

श्रुत्वा तमेन प्रतिभाचमत्कृतं, श्रीमान्नृसिंहो जयपूर्नरेश्वरः
आहूय सत्संस्कृतरम्यविद्या—लये स्वकेऽध्यक्षपदे न्ययुङ्क्त

२००

अत्रागतः सत्सु सदैव मान्यतां प्राप्तः स चायं रविवत्प्रकाशितः
अनेकशो ब्राह्मणबालकाँस्तथा, शास्त्राणि सर्वाणि सुखं व्यबोधयत्

२०१

भजन्निहाऽयं मधुसूदनाख्यं, विदाम्वर धर्मसभाप्रधानम्
वेदेष्वपि स्वां प्रतिभां प्रसार्य, ग्रन्थांस्तदीयान् हृदि सन्यवेशयत्

२०२

एवं सदा भारतसंस्कृतेर्वै, संरक्षणं धर्मसुपोषणं च
कुर्वन् स्वबुद्धेर्बलतो मनीषी सुसंयतोऽपि स्थविरत्वमाप्तः

२०३

अमरभणितिसेवामित्थमेष प्रकुर्वन्, समुचितसमये स्वे राजसेवाऽवकाशम्
अलभत बहुमानावाप्तिपूर्वं सहर्षं. पुनरपि सुरवाणीं सेवते नित्यमेव

२०४

जरामिदानीं समवेक्ष्य चाप्तां, दुरत्ययां सोऽयमुदारभाव
श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपन्नः, काश्यां वसन् यापयति स्वमायुः

२०५

स एष वृद्धो बुधमौलिरत्नमसाध्यरोगेण विवेल्लितोऽपि
उमासहायेन शिवेन रक्षां, कृत्वाऽधुना संप्रहितोऽत्र दिष्ट्या

२०६

संमानयोग्योऽस्ति स एष मान्यतां, सभक्तिवन्द्योऽस्ति स एष वन्द्यताम्
आनन्दनीयोऽस्ति मुदाभिनन्द्यताम्, सुदर्शनीयोऽस्ति स एष दृश्यताम्

२०७

प्रशंसनीयोऽस्ति परं प्रशंस्यताम्, अभ्यर्चनीयोऽस्ति मुदा समर्च्यताम्
समर्थनीयोऽस्ति सदा समर्थ्यताम्, संसेवनीयोऽस्ति सदैव सेव्यताम्

२०८

यो विद्वान् जपत्तने कविकुले देहोदयं लब्धवान्
यो वात्रैव च राजपंडितगुरोर्विद्योदयं लब्धवान्
प्रज्ञापाटवतश्च यत्र गतवान् भाग्योदयं लब्धवान्
सोऽयं पंडितमण्डनं गिरिधराचार्यश्चिरं जीवतात्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

२०९

शब्दागमज्ञानविधौ पतञ्जलिं, न्यायागमे चापि महर्षिगौतमम्
संस्मारयत्येष बुधान्विलोकितः, संभाषितः, सोऽयमरोगितामियात्

२१०

सेवनं यस्य मन्दानां कोविदीकरणौषधम्
स वै गिरिधराचार्यो बुधोऽस्मासु प्रसीदतात्

२११

कवीशकुलमण्डनं श्रुतिविरोधिनां खण्डनं, सुहृन्निकरचन्दनंकुटिलतर्कविध्वंसनम्
प्रधान सुरवन्दनं नमत सत्पथस्यन्दनं सुतीक्ष्णमतिमंडितं गिरिधराभिधं पण्डितम्

ज्ञानं गिरिं यो धरति स्वहस्ते

[डा. चन्द्रधरशर्मा, भूतपूर्वकुलपतिः, जबलपुरविश्वविद्यालयः, कोटा]

२१२

अधीत्य वेदांश्चतुरोऽपि येन
सार्थीकृतं नाम निजं गुणेन
प्रकाशितं येन मतं श्रुतीनां
विद्यागुरूणां मधुसूदनानाम्

२१३

त्रातुं विनेयानिव मोहवृष्ट्या
ज्ञानं गिरिं यो धरति स्वहस्ते
तस्यास्तु मोदाय विशुद्धबुद्धे-
रियं यशोदा कृतिरुज्वला मे

सम्मानपत्रं हि समर्पयामः

[श्रीवैद्यनाथायुर्वेदभवन-संचालक कार्यकर्तृगणास्तथा बुन्देलखण्डवैद्यहकीम परिषद्सदस्यगणाः]

२१४

वेदादिविद्याधिगतात्मतत्वम्
विज्ञान-संवर्द्धितधर्मपान्थम्
शास्त्रार्थसंशासितशंकिलोकम्
वैराग्यविद्रावितमोहमुद्रम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

२१५

वेदान्त-विज्ञापित-ब्रह्मभावम्
न्यायास्त्र-संन्यासित-नास्तिकाख्यम्
अध्यापन-ख्यापित-शिष्यलोकं
नमामि श्रीगीर्धरवेदविद्यम्

२१६

विराजसे सम्प्रति विश्वनाथ-
पुरीमहापण्डित-मण्डलान्तः
तथापि काशीप्रतिरूपझांसी-
समागमोऽद्यात्र सभाजनीयः

२१७

दृष्टा पुरा ये खलु बाह्य-दृष्ट्या
झांसी नगर्यां विबुधा विदग्धाः
तेऽध्यात्मदृष्ट्याद्य विलोकनीया
अभ्यन्तरीयाः भवतामिमे हि

२१८

श्री वैद्यनाथायुर्वेदसद्मनि
कार्यस्थिता वैद्य-हकीम-सभ्याः
प्रसन्नचित्ता भवदागमेन
सम्मान-पत्रं हि समर्पयामः

आयुर्वेलोल्लसितभारतभारतीकः

[अभिमन्युपुस्तकालयसदस्याः, काशी]

२१९

आशैशवं धवलितद्विजराजलक्ष्मीलीलासमुज्ज्वलविभूतिविभूषिताङ्गम्
ज्ञानप्रदं सुरधुनीरसिकं वृषस्थं मान्यं सदा सुमनसामभिनन्दयामः

२२०

यः पुण्यगेहमपि देहमुपेक्षमाणो
धर्मश्रिया भजति मानवमानवृद्धिम्
विद्याविवेकविनयादिधनार्पणेन
देशं समुन्नयति यस्तमुपाश्रयामः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

२२१

गोवर्धनं विशसयन्नरमोहनार्थं
गीतोपदेशविधिना विदधान्नितान्तम्
सत्यानुरागलसितोज्ज्वलवृत्तिमञ्चन्
लोकाञ्चितो जयति कोऽपि महाविभूतिः

२२२

यो निर्जरार्चनपरोऽपि जरोपगूढो
जायापहोऽप्युपचितोष्णानिसर्गरिक्तः
वाणीप्रियोऽपि कमलाश्रितपादपद्मः
कीर्तिस्तुतो जयति सञ्चितपुण्यराशिः

२२३

व्याख्यानलेखनकलाकुशलैर्लंघ्य
कीर्तिच्छटः सकलशिक्षितवृन्दवन्द्यः
आयुर्बलोल्लसितभारतभारतीकः
स्वस्थः प्रकाशयतु विश्वमयं चिरायुः

विकचयतितरां मानसेन्दीवराणि

[श्री देवनायक आचार्याः-श्रीराजेश्वरशास्त्रिद्राविडाः]

२२४

श्रीमानद्यापि विद्यासमुदयविषये यावदायुर्व्यनस्य-
न्नश्रान्तोपात्तभूरिश्रमविविधसमुद्योजनो धर्महेतोः
साभापत्यं सभायां सकलबुधजनोन्नीतमानोपनीतं
संभूष्यास्माकमार्यो विकचयतितरां मानसेन्दीवराणि

२२५

पुत्राणां संस्कृताध्यापकबुधगणने दर्शितादर्श आर्यः
संस्थासम्मेलनादेः प्रथित ऋषिकुलादेश्च संसाधकोऽपि
वर्णानामाश्रमाणां हितमनुविहिते च स्वराज्यस्य संघे
कर्त्ता धर्त्ता तथैको भवति हि स भवान् सर्वनिर्वाहकश्च

२२६

साभापत्यं सभायाः सुकृतमुपकृतं तेन च स्मोऽधमर्णाः
देया प्राप्तप्रशस्तामितगुणिपदवीके दवीयस्यहो का
कार्याध्यक्षस्य वर्षास्पदमिदमिह गीर्वाणवाग्वर्धिनी स्वं
युष्माभिर्भूषितं स्यादिति तु सविनयं केवलं सूचयेत्तत्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

२२७

संघस्य कार्यकारिण्याः कार्याध्यक्षं त्विदं पदम्
भूषयन् आर्य ! गीर्वाणवाग्वर्धिन्याः प्रवर्धयेः

सा चातुरी चातुरी

[नूतनबालकगणेशोत्सवमण्डलसदस्याः, काशी]

२२८

शाखाशतप्रवितता विकसन्नवार्थ-
तत्त्वप्रसूनसुरभीकृतदिग्विभागा
भूयाच्चिराय फलभूतचतुःपुमर्था
सा श्रेयसे भगवती श्रुतिकल्पवल्ली

२२९

श्रीमद्भारतभूमिभासुर शिरोऽलंकार हीरोज्वलाः
वेदार्थाऽभिनवप्रचारकुशलाः ! व्याख्यानविख्यापिताः
नानाशास्त्रकथाकुतूहलकलापारङ्गमाः वाग्मिनः
संख्यावत् प्रथमाः ! गणेशभवने वः स्वागत कुर्महे

२३०

शास्त्रीयेऽप्यथलौकिके क्वचिदपि श्रीमन्मुखाम्भोरुहात्
निर्यान्ती विषये विशेष विदुषां चेतश्चमत्कारिणी
वाग्धारा शशिमौलिमस्तकजटाजूटात्पतन्ती रयात्
त्वङ्गत्तुङ्गतरङ्गभङ्गिसुभगा गङ्गेव विद्योतते

२३१

श्रीमद्भिः श्रुतिमार्गरक्षणविधौ धौताशयैर्भारते
भ्राम्यद्भिर्जनतोपदेशविधये तप्तं तपो वाङ्मयम्
स्वान्तध्वान्तविभेदभानुभिरिव प्रौढैः प्रबन्धोच्चयै-
र्वाग्देवीसदने विभूतिरसमा संवर्धिता गीयते

२३२

विद्या यत्र न तत्र लोकमनसामावर्जने कौशलं
लोकाचारपरे नरे न पटुता विद्यारहस्यागमे
सत्यं किन्तु भवद्गुणाम्बुधिरिमामुक्ति निधत्ते पुरो
या लोकद्वयसाधनी तनुभृतां सा चातुरी चातुरी

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

२३३

नूतन बालक गणपति-महोत्सवे मंडलं तदिदम्
अधिकरकमलं भवतामाधत्ते शब्द-कुसुमानि

अश्रान्तः कर्मयोगे

[देववाणीपरिषद, आचार्यपीठम्, बरेली]

२३४

अश्रान्तः कर्मयोगे श्रुतिविषयपरे वेदचक्रैकशस्त्रः
गोप्ता स्वर्गोव्रजानां गिरिधरवपुषा शेषवैदुष्यमाप्तः
वाचस्पत्यं प्रतीता सुविबुधरतये कृष्णकीर्त्यापि कान्ता
नृत्यन्ती देववाणी विलसति सततं त्वन्मुखे देवगीता

२३५

अहो ! चतुर्वेदविदां वरीयान्
भवानियान् मे विदुषां गरीयान्
गिरिर्गुरुत्वं धरते हिमालयो
गुरुर्गिरित्वं वहते हिमाऽलयः

२३६

काले कालेऽवतारैरवति स तु सदा सत्यमेतत् स्मरामि
जाने गीतासुवाणीं गिरिधरभगवद्भक्तियोगैकहृद्याम्
प्राच्यानुष्ठान-श्रेणी-विमल-रस-सुधा-स्राविणी हीयतेऽद्य
त्रायस्वाद्याऽदिशास्मान् कथमियमचिरं स्यान्मता भारतीयैः

धर्मज्ञो जगदुद्याने

[श्री हृषीकेश चतुर्वेदी-आगरा]

२३७

गिरया लालितो नित्यं रिपुषट्कविनाशकः
धर्मज्ञो जगदुद्याने लसतां शरदां शतम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

स्वागतम् ते पूज्य बुधवर

[हैदराबादनगरे स्वागताभिनन्दनपत्रम्]

२३८

आयि, सकलबुधमण्डनोचितचारुपुष्पितपारिजात !
जातिकुलगौरवविवर्धनभक्तिभावुकभव्यगात
विलसतीदं सदसि पुरतः प्रणयभरवेलाचलन्ते
स्वागतन्ते पूज्य, बुधवर, स्वागतन्ते स्वागतन्ते

२३९

विशदधीधनपूरिताखिलपूजितावनिकण्ठमाल,
सर्वदिव्यदिगन्तविश्रुतकीर्तिवरवैभवविशाल,
बालरविकर इव धरणितलमञ्जुलं प्रतिभाबलन्ते
स्वागतं ते पूज्य, बुधवर, स्वागतन्ते स्वागतन्ते

२४०

बालचन्द्रमरीचिरिव सानन्दितोदधितरलवीचिम्
विदलितोयाश्चलनवोदितशिक्षुदिवाकर इव सुप्राचीम्
चरणगतिरिह सादरं ह्यभिनन्दयति जनमानसन्ते
स्वागतन्ते पूज्य, बुधवर, स्वागतन्ते स्वागतन्ते,

२४१

अद्य वर्णाश्रमततिर्निधूय जीवति सर्ववादम्
प्राप्य ते वाणोसुधारससिक्तवीणावरनिनादम्
भारतीयं सरलललिता प्रकुरुते हि प्रतीक्षणं ते
स्वागतन्ते पूज्य, बुधवर, स्वागतन्ते स्वागतन्ते

"आदित्यस्त्वं प्रतापे"

[ऋषिकुलस्नातकमण्डलम् इन्द्रप्रस्थः]

२४२

एककनिष्ठासन्धृतसंस्कृतगोवर्धनाचलव्राते
गुरुवर-गिरिधरशर्मणि गिरिधरधर्मणि नमस्ततिर्लसतात्

२४३

श्रीमन्महामहोपाध्यायं, कुमतेरनध्यायम्
सुमतेश्च स्वाध्यायं, ध्यायं ध्यायं प्रसीदामः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

२४४

निहितं गुरुपादोदितचित्सुरसरिताभृतं सपर्यायाम्
ऋषिकुलविद्यापीठस्नातकमण्डलमिदं कमण्डलुवत्

२४५

कलियुगकलितेषूपद्रवेषु द्रवन्ती,
क्वचिदपि शरणं न प्राप विद्यानवद्या
इति समुचितमस्याः स्थानमालोक्य सन्तः,
ऋषिकुलमिह विद्यापीठतां नीतवन्तः

२४६

लवपुरजयपुर्योर्भूयसः शिष्यसङ्घान्
इह बहुविधविद्यावार्भिराप्लाव्य भव्यान्
रविरिवं निजरश्मीन् सर्वतः सम्प्रसार्या-
खिलधरणिकलङ्कं पङ्कमाशोषयस्त्वम्

२४७

सकलसुकृतराशी राजते कापि काशी
गुरुवर, धृत सौख्या विश्वनाथस्य सख्या
अमरविधु नुतत्वात् स्नातकैरर्चितत्वात्
स्थितमिह युवयोर्नस्तारकत्वाच्च सख्यम्

२४८

आदित्यस्त्वं प्रतापे, विधुरसि मधुरायां रुचौ, मङ्गलात्मन्
निःसादृश्यो बुधोऽसि, प्रथित इह गुरुस्त्वं सहस्राधिकानाम्
देशख्यातः कविस्त्वं, हृदि चरसि शनैर्भावुकानां, विरुन्ध-
त्कीर्तीन्दूनाञ्च राहुर्जयसि गुरुवर, ब्रह्मवंशाग्रकेतुः

२४९

प्राचीना वेदतोऽपि प्रतिपलमिह या नूतना मत्कवित्वात्पुष्टा
या भीमसेनादपि मृदुलतरा राधिकावल्लभाङ्गात्
तामेतां भारतीयां विविधगुणगणालङ्कृतां संस्कृतिं वो
वाचोयुक्त्या प्रकाशामखिलबुधगणो वन्दते श्लाघमानः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

विद्वद्वरिष्ठं नुमः

[हीरकजयन्ती समितिः, देहली]

२५०

बाल्यादेव हि यस्य बुद्धिविभवो दिग्विश्रुतानां विदां-
स्वान्तं विस्मय-संप्रमोदनिचयान्चातं विधत्तेऽनिशम्
आम्नायप्रमुखाश्चतुर्दशमिता विद्याः क्रमन्तेतरां-
यत्रासौ विदुषां वरो गिरिधरः शास्त्री न वन्द्योऽस्ति कैः

२५१

यत्पाण्डित्यचमत्कृता नु बहवः संस्था लसत्सत्प्रथा-
दिग्विश्रान्तसमज्ञविज्ञजनतामूर्धाभिषिक्तादृताः
यं नैकैर्विरुदैरसर्वसुलभैर्वाचस्पतीत्यादिभि—
श्चक्रुर्भूषितमद्य तं गिरिधरं विद्वद्वरिष्ठं नुमः

———

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

उत्तरभागः

स्मृतयः

श्रद्धाञ्जलयः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

तेषामलौकिकं पुण्यम्

[राजस्थानस्य प्रथममुख्यमन्त्रिणः श्रीहीरालालशास्त्रिमहोदयाः]

२५२

राजस्थानमुख्यमन्त्रिपदग्रहणानन्तरं शुभाशीर्वादा-
काङ्क्षिणा मया तत्रभवतां महामहोपाध्यायानां
श्रीमतां पंडितगिरिधरशर्मचतुर्वेदानां गृहं
गत्वा चरणेषु प्रणामाः समर्पिताः—

२५३

"चतुर्वेद महाभागा वाराणस्यां दिवंगताः
तेषामलौकिकं पुण्यं संस्मरामि पुनः पुनः"

शर्मनृमणिः

[श्री पं० रामकुबेरमालवीयमहोदयाः वाराणसी]

२५४

आसीद्गिरिधरो नाम पुरा जयपुरे स्थितः
यस्सर्वशास्त्रनिष्णातो व्याख्याने कुशलः सुधीः

२५५

शुष्काणामपि विषयाणां सरसत्वं ददौ तु यः
वाचस्पतिर्महाप्राज्ञो गीताकथनकौतुकी

२५६

क्वचित्प्रेमाम्ब्वार्द्रोऽमृतकिरणकान्तो मणिरिव
क्वचित्त्वं तेजस्वी रविकिरणकान्तो मणिरिव
क्वचिद्दानी मानी प्रियसुखदचिन्तामणिरिव
अपूर्वस्त्वं विद्वन्नसि गिरिधरः शर्मनृमणिः

२५७

समर्थो नादित्यस्त्वदभिभवकार्ये कथमिव
न वा छिन्नो भिन्नः कठिनहृदयः प्रस्तर इव
न वा दुष्प्रापस्त्वं सकलसुलभोऽम्भश्चय इव
विचित्रालङ्कारः स हि गिरिधरः शर्मनृमणिः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

२५८

निमग्नो यो नित्यं मननजलधौ मन्दर इव
किरन् शास्त्रव्याख्यांशुभिरमृतबिन्दून् विधुरिव
वहन् मित्रत्वं यो हरति जड़तां भास्कर इव
रुचिं कुर्वन्नास्तां स हि गिरिधरः शर्मनृमणिः

२५९

रसिकजनचकोरान् नन्दयन् वाङ्मयूखैः
तिमिरततिमुदस्यन् छात्रवृन्दान्तरिक्षे
विबुधगणपयोधौ वर्धयन्नुत्तरङ्गान्
लसति गिरिधरोऽयमद्वितीयः सुधांशुः

२६०

आदौ माङ्गलिके सुकृत्यनिवहे यः श्रीगणेशायते
सर्वेषां च मुखेषु यः प्रतिदिनं श्रीरामनामायते
मन्ये संस्कृतवाङ्मये गिरिधरे विद्वत्प्रगल्भे गणौ
विष्णोरेव महान्प्रतापकिरणः सोऽद्यात्र मूर्तायते

२६१

अयं मूर्तो धर्मः किमु सुकृतपूरो हि विदुषाम्
प्रसादो भारत्याः किमुत तपसां सुन्दरनिधिः
समुद्रोऽयं किंवा गुणगणमणीनां किमथवा
बुधानामानन्दः परिलसति साक्षादिह पुरः

२६२

सुधाविद्यापात्रं परमरमणीयं विधिवशा-
त्किमु स्वर्गान्नीतं भुवि सकलसञ्जीवनकरम्
सरस्वत्या हासः किमु सकलसृष्टेर्विमलता
विलासोऽयं रम्यः स्मरहरनगर्याः किमथवा

२६३

सिताम्भोजं भव्यं त्रिदशतटिनीपुण्यजलजम्
सितो मुक्ताहारः किमुत बुधलक्ष्म्या उपगतः
विचित्रं लास्यं वा सुरवचनदेव्यास्सुमधुरम्
समृद्धं तेजः किं धवलधवलं शाम्भवमिदम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

२६४

अपूर्वं किं पुण्यं ह्युपनतमिदं नन्दनवना-
दचिन्त्यं माहात्म्यं पुरमथनदेवस्य किमिदम्
रहस्यं शस्यं वा किमुत परदेव्यास्सुरगिराम्
समालोक्यैवं त्वां विदधति जनास्संशयकथाः

२६५

सुरम्यो माकन्दोऽयमिति रसिकैर्भृङ्गविबुधैः
विपश्चिन्मार्तण्डोऽयमिति सकलैश्छात्रकमलैः
सुरद्रुर्मन्दारोऽयमिति मुदितैः पण्डितसुरैः
दयालुः श्रीकृष्णोऽयमिति भुवि तद्भक्तनिवहैः

२६६

महादानी कर्णोऽयमिति सकलैर्याचकवरैः
महौजस्वी सूर्योयमिति मतिमत्तापसवरैः
सुधांशुस्सम्पूर्णोऽयमिति च चकोरैर्द्विजगणैः
श्रितस्त्वं कल्याणं रचयसि यथार्हं प्रतिदिनम्

२६७

तमोऽज्ञानं भिन्दन् स्फुरतु सततं सज्जनमणिः
बुधालीन्दुश्रेण्यां विकिरतु करानम्बरमणिः
सुविद्याब्धेर्जातो वसतु हरिणा कौस्तुभमणिः
सतां चित्ते सोऽयं स हि गिरिधरश्शर्मनृमणिः

२६८

तस्मिन्दृष्ट्वा बुधेन्द्रं विबुधगिरिगणाः कम्पमाना इवारम्
कामक्रोधादयस्ते प्रबलरिपुगणाः कांदिशीका भवन्ति
विद्वन्मूर्धन्यधन्यैर्विबुधविटपिभिःस्सर्वविद्यालताभिः
ज्ञानाम्भोदैर्वृतस्स गिरिधरमहितो माल्यवान्पर्वतोऽस्ति

गुरु-प्रगीतिः

[श्री विद्याभास्करमणिशंकरवसन्तराम उपाध्यायाः सूरत]

२६९

गुरुवर्यपादपङ्कजे रतिरस्तु मे सदा
भवदावदाहशान्तये तदलं भवेत्सदा
तिमिरे न तत्त्वदर्शने नयनं प्रवर्तते
स्खलतीव वृत्तिरित्यतो विनियुङ्क्ष्व संविदा

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गुरुवर्यपादपंकजे रतिरस्तु मे सदा
किमयं सुखाय वास्ति मे किमु संकटाय वा
अतियत्नतोऽपि मुह्यति चेतो भवे सदा
गुरुवर्यपादपंकजे रतिरस्तु मे सदा
भवदावदाह शान्तये तदलं भवेत्सदा
गुरुवर्यपाद पंकजे रतिरस्तु मे सदा

पीयूषसम्भाषणाः

[कविशिरोमणय आचार्यश्रीनवलकिशोरकांकरमहोदयाः जयपुरम्]

२७०

स्वर्याता अपि शास्त्रिणः सुधिषणाः पीयूषसम्भाषणाः
नानाशास्त्रविचारपूरितवचोविच्छित्तिसम्भूषणाः
वाग्देवीवदनायमानवदनाः सान्तेसदां जीवना
श्रीमद्भ्यो मयका नतेन शिरसा श्रद्धाञ्जलिः प्राप्यते

"कोऽन्यः कर्तुमिहेश्वरः

[श्री पं० रघुनाथप्रसादचतुर्वेदिमहोदयाः, मथुरा]

२७१

आसन् श्रीगिरिधराऽभिख्याः शर्माणो बुधतल्लजाः
महामहोउपाध्यायपदव्या समलङ्कृताः

२७२

कुशाग्रबुद्धयो बाल्यात्ते समासन् स्वजीवने
येन त्वेतादृशीं ख्यातिं जग्मुर्देशबुधेषु ते

२७३

विद्वांसस्तेऽमरगिरस्त्वपूर्वा भारतेऽभवन्
भाषणाऽध्यापनेऽथापि लेखने सुविचक्षणाः

२७४

सनातनस्य धर्मस्य संस्कृतस्य च सेवने
समस्तं जीवनं स्वीयं यापितं यैर्महात्मभिः

२७५

प्रतिभा त्वद्भुता तेषामसामान्यश्च साहसः
त्यागोऽपूर्वः साधना च महती जीवनेऽभवत्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

२७६

परम्पराः स्वदेशस्य प्राचीना यैश्च जीवने
धर्मस्य रक्षिता प्रागैस्तेऽसामान्या बुधेषु के

२७७

अलौकिकं तद्वक्तृत्वं विद्वत्वं प्रौढतां गतम्
साधिकारं लेखकत्वं लोके नान्यत्र दृश्यते

२७८

तेषां संघटने शक्तिरद्भुताऽऽसीन्महात्मनाम्
विद्वत्वे तादृशेऽप्यासीन्नमदाऽऽश्चर्यदा भृशम्

२७९

मननं चिन्तनं तेषां स्वकार्यस्य च पद्धतिः
प्राचीनेषु विचारेषु त्वासीद् वैज्ञानिकी भृशम्

२८०

संस्था देवगिरो देशे तून्नतिं गमिताश्च तैः
यासु तत्सहयोगोऽभूद् देशे श्रैष्ठ्यं गताश्च ताः

२८१

विद्वांसस्तूद्भटास्तेषाँ सच्छिष्या इह भारते
समुल्लसन्ति ये तेषां स्वरूपं बोधयन्ति हि

२८२

सनातनस्य धर्मस्य दृढ़ा स्तम्भा हि तेऽभवन्
पलायन्ते स्म यन्नाम्ना चान्यपन्थानुयायिनः

२८३

देशेऽमरगिरः संस्था बह्व्यः सन्तीह भारते
तत्कार्यं पद्धतिं तांश्च स्मारन्त्येवाधुना बुधाः

२८४

जयस्य पत्तने राज्ञो महाविद्यालयस्य ते
प्राचार्यत्वमलंचक्रुर्व्याप्य विंशतिवर्षकान्

२८५

सहारनपुरे पूर्वं ततो ज्वालापुरस्थिते
अध्यापयन्तर्षिकुले कुर्वन्तो धनसंग्रहम्

२८६

सनातनस्य धर्मस्य महाविद्यालये ततः
प्राग्व्याप्य सप्तवर्षान्तं कृतं लवपुरे च तैः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

२८७

वांराणस्यां च वार्धक्ये विश्वविद्यालयेऽभवन्
अध्यक्षास्ते महात्मानश्चतुर्वर्षावधिस्ततः

२८८

हिन्दूनां विश्वविद्याया आलये सुमहत्तमे
अन्वेषणविभागस्य त्वासन् सञ्चालकाश्च ते

२८९

इत्थं स्वजीवनं तैश्च संस्कृतस्य महोन्नतौ
गमितं तेन तेऽभूवन् महामहिमशालिनः

२९०

जीवनेऽनेक संस्थाभिः संबद्धा भारते ततः
तासामुन्नतये तैश्च चेष्टितं निशिवासरम्

२९१

देशे विद्वद्विशिष्टैस्ते सम्मान्या भारतेऽभवन्
काश्यां येषामग्रपूजा राष्ट्रस्य पतिभिःकृता

२९२

देशे यावन्ति कार्याणि धर्मार्थाऽमरवाक्कृते
कृतानि यानि श्रीमद्भिः कोऽन्यः कर्तुमिहेश्वरः

मनस्सु रमतां सताम्

[डा० श्रीनारायणमिश्रमहाभागाः. वाराणसी]

२९३

गिरिशं गुरुमञ्जसा समर्चन्नधिगत्याऽखिलशास्त्रसारमारात्
प्रथयन् स्ववचश्चतुर्षु दिक्षु प्रणतो यो विबुधैरपीज्यकल्पैः

२९४

रिपुरप्यवमानितोऽत्र यस्य प्रथिताचारविचारचातुरीभिः
अवदत्सदसीह साधुवादानपहातुं स्वगतान् जनापवादान्

२९५

धर्मार्थकामानपि सेवमानो, यथायथं वेदपथं स्मरन् यः
तिरोऽकरोन्मोक्षपदं न संगात् सनातनं वेदविदां वरिष्ठः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

२९६

रम्या यस्याऽऽकृतिः पुण्या गुम्फा कर्मैषणा शिवे
धिषणोपनिषत्स्वासीत्करुणा जगति स्थिता

२९७

शर्मा यशःशरीरोऽपि चतुर्वेदपदाभिधः
विवस्वानिव लोके स मनस्सु रमतां सताम्

"धन्यं नूनमभूद् जगत्"

[आचार्याः श्रीरमेशचन्द्रशुक्लाः देहली]

२९८

सर्वत्रैव सुधीः प्रसारममितं गीर्वाणवाण्या भृशं,
कृत्वाऽऽयोज्य च भारतोपकृतिकृत् सम्मेलान्यन्वहम्
शास्त्रार्थैर्बहुभिश्च संस्कृतिपरैः सम्पादनेनापि च
विश्वोत्थानकरैश्च कृत्यरुचिरैः राष्ट्रं सिषेवेऽनिशम्

२९९

वाग्मी सूरिसमूहभूषणमसावासीत्प्रमाणे पदे,
वाक्ये चोत्तमकोविदः श्रुतिविदामग्र्यश्च शब्दार्थवित्
स्वान्तेकर्मणिवाचि चापि सुजनः श्रेष्ठोऽभवद्यो भुवि,
धन्यं नूनममूद जगद् गिरिधरं शर्माणमासाद्य तम्

३००

न्यायशास्त्रसुकवीन्द्ररूपिणे वल्लभाय महसे महात्मने
श्रीमते गिरिधराय सन्तु मे विद्वराय गुरवे नमो नमः

चतुर्वेदिचम्पूस्थपद्यानि

[श्रीमन्तः डा० रुद्रदेवत्रिपाठिनः, देहली]

३०१

अभिनवमृदुरूपं सर्वदृङ्मोहनीयम्
कनकरुचिरमङ्गं पद्मवच्छोभिवक्त्रम्
गिरिधरमभिवीक्ष्य प्रोचुरुच्चैः समेऽपि
भवति भुवि सुपुण्यैः पुत्रलाभः शिवाय

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

३०२

वेदानां प्रथनेऽपि या प्रथमतः प्राकट्यमासादिता
या चास्ते जननी समस्तजगतो भाषा समूहस्य वै
संवास्तां सुरगीर्ममापि शरणं स्वान्ते दृढं संस्मरन्
संस्कारेण सुसंस्कृतो गिरिधरोऽध्येतुं रतः संस्कृतम्

३०३

वाग्वैदग्ध्यविचक्षणान् भगवतीपादाम्बुजेन्दिन्दिरान्
शास्त्राम्भोनिधिपारगान् सुचरितान् श्रीजीवनाथाभिधान्
लक्ष्मीनाथगुरुस्तथा श्रुतिततेर्विज्ञानभाष्याङ्कुरान्
प्रख्यातान् मधुसूदनाभिधगुरून् भक्त्या नमामो वयम्

३०४

अहो मेधाशक्तिर्गुरुचरणभक्तिश्च महती
विचित्रा शास्त्राणां सततमनुरक्तिः स्वपठने
फलं यासां लब्ध्वाऽभवदिह सदैवोर्जितयशाः
परीक्षायां सर्वप्रथमपदभाग् श्रीगिरिधरः

३०५

निरन्तरमधीतिना गिरिधरेण शास्त्रेषु सत्-
परिश्रमपुरः सरं सपदि लम्भितः प्रौढिमा
ततो वितरितुश्च तं गुरुकृपासुधासेकतः
सहारनपुरे कृतं प्रथमतः शुभाध्यापनम्

३०६

बाल्ये यः पठनेन शास्त्रविषये प्रौढिं परां प्राप्तवान्
शास्त्राध्यापनपूर्वकं च विहिता येन स्वशिष्या बुधाः
स्वाध्यायेन च यस्य सम्मुखरिताप्रज्ञाप्रसादोदया
शास्त्रार्थे प्रखरः क्षितौ गिरिधरः ख्यातः स विद्वद्वरः

३०७

येषां सार्वजनीनया प्रतिभया वादिव्रजा मूकतां
याता धर्मभृताश्च पावनयशोघोषः क्षितौ व्यापृतः
येषां भूरिपरिश्रमेण वितताभूयः प्रतिष्ठां श्रिता
वन्द्या निर्जरभारती क्षितितले तेभ्यो महद्भ्यो नमः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

विद्वन्मणिरयमासीत्

[देवर्षिकलानाथशास्त्रिणः, जयपुरम्]

३०८

जयपुरजगतीभूषणभूतः कश्चिच्छतात् समानां प्राक्
राजसभाजित-विप्र-चतुर्वेदकुले कृती जनिं लेभे

३०९

मधुसूदनाख्यविबुधाद् वेदरहस्यानि येन सविमर्शम्
विज्ञानाभिमुखेनाभिगमेनोपार्जितानि विमलधिया।

३१०

जयपत्तनीयसंस्कृतकालेजाध्यक्षताऽलमक्रियत
'संस्कृतरत्नाकर' इति मासिकपत्रं प्रकाशितं सुचिरम्

३११

येन सनातनधर्मध्वजः समुच्छ्रायितोऽखिले देशे
शास्त्रार्थैस्तत्पक्षः सुदृढं संस्थापितः सभासु सदा

३१२

संस्कृतसुधियो येन हि संघटिता अत्र भारतेऽप्यखिले
विद्वन्मणिरयमासीद् गिरिधरशर्माभिधश्चतुर्वेदः

३१३

इहैव जयपत्तने पुरुषरूपवाग्देवता-
ऽवतारमिममद्भुतं प्रतिदिन न्यषेवन्त ये
समेऽद्य खलु धन्यतामनुभवन्ति यद् व्याप्नुते
दिगन्तकुहरेष्वहो गिरिधरस्य शुभ्रं यशः

३१४

येनाऽयं जडधीः स्ववत्सलदृशा संवीक्षितः शैशवे
विद्यारम्भमिषेण वाङ्मयनिधेर्गम्भीरतां लम्भितः
तस्याऽद्याऽऽदिगुरोः शताब्दिकमहे सश्रद्धमावर्ज्यते
तन्मित्रस्य सुतेन तेन हि कलानाथेन नत्यञ्जलिः

३१५

विद्वद्वृन्दशिखामणेरुपनिषद्विज्ञानमीमांसिनः
शब्दाम्भोनिधिमन्दरस्य करुणाब्धेर्वाग्मिताशेवधेः
राष्ट्राधीशसभाजितस्य विलसत्कीर्तेश्चतुर्वेदिन-
स्तस्याऽद्य स्मृतयेऽर्घ्यमर्पयति तन्मित्रात्मजोऽयं जनः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गिरिधरं शर्माणमीडामहे

[श्रीमन्तः डा० रेवाप्रसादद्विवेदमहोदयाः वाराणसी]

३१६

वाग्देवीकिलकिञ्चितानि, कमलानर्माणि, कीर्तिप्रिया
हेवाकानभिरूपता—प्रियतमामोट्टायितानीव यः
धन्यः पण्डित–वाग्मि–मण्डल–महाकान्तारकण्ठीरवः
शश्वत् सम्यगभुङ्क्त तं गिरिधरं शर्माणमीड़ामहे

३१७

कण्ठे यस्य विराजते स्म भगवान् स्तम्बेरमास्यः स्वयं
निर्ह्राद्–ध्वनिमार्जनोदयरणद्भाण्डव्रजोड्डामरः
नो चेद् वारिदमण्डलं किमु ततोऽपैति स्म भीतं यथा
ध्वानं गर्जनतर्जनैश्च सहितामादाय विद्युत्प्रियाम्

३१८

तर्कैर्युक्तिवधूविलासरुचिरैर्वादेषु पाथोनिधि-
स्फीतेषूत्तमविक्रमः स्म क्रमते मन्थानभूध्रो नु यः
तस्मै वेद–तदङ्ग–तदद्वय–महाविज्ञान–विद्याद्भुत-
स्वैरप्रक्रम–निस्सपत्न–मतये श्रीशर्म्मणे स्मो नताः

३१९

काशी येन सनाथिता स्थविरता–सन्मङ्गलेनायुषा-
युक्तेनापि यवीयसेव वचसा स्तोमेषु राराजता
सर्वं शुक्लवपुर्विशुद्धवसनः स्फीतस्मितोद्वासित-
श्रोतृव्रातमनस्तमाः गिरिधरः श्रीविश्वनाथः परः

३२०

गीताचार्यं इह स्वयं भगवती वाग्देवता वर्षय-
त्याञ्जस्येन समस्तशास्त्रवचनैदम्पर्यपारम्परीम्
नो चेत् पण्डितराज–राजिरपि यं नो शक्नुते विस्तरै-
रर्थं वक्तुमिमं कथं स वदति स्माल्पीयसाऽनेहसा

३२१

भाग्यं संस्कृतवाङ्मयस्य परमं, वाग्देवतायाः परं
सौभाग्यं, परभागता च चरमा काव्यार्थशास्त्रार्थयोः
आचार्यैः करपात्रपादसहितैः संभावितेनागता-
न्येकीभूय नु गामिमां गिरिधराकारेण कालेऽधुना

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

३२२

धर्मो येन सनातनः सुकृतिना पाश्चात्त्य-काष्ठोत्थिता-
नाघातान् परिभूय भूय इव नः संस्थापितो भूतले
चातुर्विद्यधुरीण एष निगमैंतिह्यं सुवर्णाक्षरै-
रुत्कीर्णः प्रणिपत्यते गिरिधरः शर्मा मया श्रद्धया

ख्यातनामा स लोके

[श्री डा० जगन्नाथपाठकमहोदयाः, प्रयाग]

३२३

दुष्टाचारैरधिकमधिकं व्योम संव्याप्य मेघैः
संवर्षद्भिः प्रभवति भृशं दुर्दिने, कोऽपि धीरः
धर्माख्यं यो गिरिवरमहो संवहन् भारतेऽस्मि-
न्नन्वर्थोऽभूद, गिरिधर इति ख्यातनामा स लोके

३२४

यस्मिन् गौरवमादधाति नहि गीः काऽपि प्रयुक्ता कवे-
वैंशिष्ट्यं तनुते न हन्त परिषद् यस्य प्रभावे सताम्
सद्विद्याविनयप्रपन्नमहसे नित्यं महाचेतसे
कस्मैचिद् दिवि वासिने गिरिधरप्रख्याय तस्मै नमः

३२५

यो ह्यासीन्महितः सतां लवपुरे विद्याप्रदानोद्यतो
राजस्थानमभूच्च येन वसता सद्गौरवस्यास्पदम्
वाराणस्यपि येन कीर्तिमभजत् काशी समग्रामित-
स्त कश्चिद् विदुषां वरं गिरिधरं यान्तु प्रणामा इमे

३२६

गाम्भीर्यं गुरु वाचि यस्य किमपि ह्यालक्षितं वा न कै-
र्गीतायाः स्फुटितार्थके प्रवचने काश्यां समुद्यत्सुखम्
व्यासः किन्नु महर्षिरेव स इहाविर्भूत आसीदहो
सम्प्राप्येव तदा शुभं गिरिधरत्वं कल्पयामो वयम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

३२७

धर्मो नाम सनातनः सुमहितो येनाभवद् भारते
व्याख्यातं सततं प्रशस्तिमयते यः स्म स्वदेशे भृशम्
मान्योऽभूदिह यो विशिष्य सुकृते वंशे चतुर्वेदिनां
ज्ञाता तस्य गिरं शुभां गिरिधरस्याकर्ण्यं धन्या वयम्

नमो नमः

[डा० श्री हर्षनाथमिश्रमहोदयाः, देहली]

३२८

महामहोपाध्यायश्रीगिरिधरशर्माणं बुधम्
प्रणमन्नहमादाय तद्वैदुष्यमहो स्पृशन्

३२९

किमप्यद्य विलिखामि यद् व्याकरणे तन्न किम
लघुदीपं निर्मामि धामनिधिं रविमर्चितुम्

३३०

सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय वैयाकरणभास्वते
समीक्षारीतिदक्षाय गिरिधराय नमो नमः

यदा कदा सूते

[श्री डा० कपिलदेवपाण्डेयाः, वाराणसी]

३३१

यस्य प्रातिभनिधिना संस्कृतगीर्धन्यतां याता
गिरिधरशर्मसमानं तनयं धरणी यदा कदा सूते

"का सत्कृतिर्नासादिता?"

[वद्यावाचस्पति श्रीप्रभुदत्तशास्त्रिणः, देहली]

३३२

धर्मो येन सनातनो दृढतया युक्त्यालवालायितः
स्वीयैः कार्यशतैः कृतश्च हरितः पुण्यैः फलैर्मण्डितः
सोऽयं नः प्रियवस्तुमस्तुसदृशो यातो विहायो भुवः
कृत्वा शोकनिमग्नमात्मसुहृदं सर्वं विदां मण्डलम्

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

३३३

का सा सत्कृतिरत्र तत्र भवता नासादिता या भवेत्
यल्लिप्सावशचेतसाऽमरपतेः पुर्यां यियासाऽभवत्
अत्र श्रोतृजनं न वीक्ष्य सुरराड़ग्रे भवान् भाषितुं
यातो यन्न शृणोति धर्म्यवचनं भूमिस्थितः शासकः

३३४

त्वत्कीर्तिः शतकाव्यवर्ण्यविषया किं तत्र द्वित्राक्षरैः
प्रगण्यत्र बहुत्र गानमयिता त्वत्सख्यतः खेलता
अद्यत्वे तु रुणद्धि बाष्पसलिलं स्मृत्या कथानां च ते
या मत्स्नेहवशेन मद्गृहजुषा रात्रौ मुहुः श्राविताः

निगमरससिन्धुर्गिरिधरः

[श्रीलक्ष्मीनारायणपुरोहितमहोदयाः, उदयपुरम्]

३३५

अहो कालक्रौर्यं कवलयति यत् प्राग्र्यपुरुषान्
सदा सल्लोकानां समुदयपरान्वयंचरितान्
इदानीं तेनासौ वरगुणनिधिर्नेत्रविषयात्
हृतोऽसौ सद्बन्धुर्निगमरससिन्धुर्गिरिधरः

३३६

अनौचित्ये रूक्षो ज्वलनतुलितो न्यायनिहतौ
सुतीक्ष्णः प्रज्ञायां मनसि सुदृढो वाचि विमलः
गभीरो व्याहारे सविनयजने स्नेहमधुरः
क्व यातो नः श्रद्धाविनयविषयोऽसौ बुधवरः

शर्वभावं प्रयातः

[श्रीवनमालीचतुर्वेदिमहोदयाः, मथुरा]

३३७

नतनृपतिकिरीटस्पृष्टसत्पादपद्मः
प्रसृमरविधुरोचिस्तैन्यकृत्कीर्तिपुंजः
अमरगुरुमनीषास्पर्धिबुद्धिप्रपंचः
स हि गिरिधरशर्मा शर्वभावं प्रयातः ।

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

'शार्दूलोपमगर्जनः'

[श्रीसबलकिशोरपाठकाश्चतुर्वेदाः, मथुरा]

३३८

महामहान् उपाध्यायः शार्दूलोपमगर्जनः
दृप्यद्दुर्वादिलोकानां बहुधा कृततर्जनः

३३९

विद्वज्जनपरीवारपरिसेवितपादुकः
शाब्दे परे च निष्णातः ख्यातो महदुपासकः

३४०

वैयाकरणमूर्धन्यः सत्साहित्यधुरन्धरः
आसीत् षड्दर्शनग्रन्थिगिरिभेदपुरन्दरः

३४१

व्याख्याने लेखनेऽथापि पाठने पटुताऽऽकरः
राजसन्मानसंशोभि-पद्मश्रीपदवीधरः

३४१

सर्वतन्त्रस्वतन्त्रोऽपि तन्त्रार्थविहितश्रमः
मन्त्रार्थवित्तमो वाग्मी निवारितपरश्रमः

३४२

चतुर्वेदसमाजस्य कीर्तिज्योत्स्नासुधाकरः
सनातनस्य धर्मस्य प्रचारे बहुलादरः

३४३

स्वच्छादर्शचतुर्वेदविद्यालयबलं महद्
वर्धयंस्तद्दशां दिव्यां करिष्यन् द्यामशिश्रियत्

जगदेकविद्वान्

[श्रीबालकृष्णभट्टाः]

३४४

यो मन्यते सुरगिरां जगदेकविद्वान् विद्यार्थिना सुरगुरुगुंरुतुल्य एव
श्रद्धाञ्जलिं गुरुवराय समर्प्य तस्मै विश्वेश्वरं तमपि नौमि तदात्मशान्त्यै

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

दिल्ली मौनभाक्

[श्रीदयाकृष्णपन्तमहोदयाः, देहली]

३४५

स्वर्गे गिरिधरं वीक्ष्य गिरिधारिसभाश्रितम्
देवैर्गिरिधरः पृष्टः कोऽयं गिरिधरोऽपरः

३४६

मण्डनैर्मण्डिता दिल्ली त्वत्प्रणीतैर्विदां वरैः
श्रुत्वा विदेहतां यातं योगिनीवास्ति मौनभाक्

—प्रश्नः—

[कविरत्नम् श्रीमन्तः अमीरचन्द्रशास्त्रिणः, देहली]

३४७

एकद्वित्रितयाऽपि वेदविषये सम्पर्कमातन्वतां
विप्राणां महिमा महान्निगदितो वेदेषु शास्त्रेषु च
कस्तावत्तव गौरवं कलयितुं लोकेषु शक्तो भवेत्,
वेदानां प्रथितोऽस्ति येन गुरुणां वन्धश्चतुर्णामपि

३४८

येन द्वारि हरेः स्थितेन रचितोऽभूद् ब्रह्मचर्याश्रमः
गार्हस्थ्यस्य विधिः पुनर्लवपुरे येनाभवत् साधितः
वानप्रस्थ इवाभवज्जयपुरे यः सर्वसङ्गोज्झितः
संन्यासाश्रममाश्रयन्मतिमतां श्रेष्ठः स काशीं गतः

३४९

सप्ताब्दिकः किल स सप्तदिनानि धृत्वा गोवर्धनं गिरिधरो विससर्ज खिन्नः
पञ्चाशदब्दमयमेककनिष्ठयेदं सम्मेलनं गिरिधरस्त्वधरत्प्रसन्नः

३५०

श्लोकस्तवैक इह नैव शतैः सहस्रैः श्लोकैरुदीर्य इति किन्तु भवामि मूकः
पङ्गुस्त्वदीयकृपया गिरिलङ्घनः स्यादन्धस्त्रिलोकदृगवागथ वावदूकः

३५१

हरिद्वारे विद्वानिति लवपुरेऽध्यापक इति,
प्रकाशं यातोऽभूदथ जयपुरे व्यापक इति
वसन् काश्यां ख्यातो नवनवमताबाधक इति,
प्रयातः संसिद्धिं स च परमयोः साधक इति

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

३५२

कवित्वं व्यक्तित्वं द्वयमपि गुरोर्गौरवमयं,
स्मरामः सश्रद्धं, सपदि च नमामः सविनयम्
कवित्वं भाषायां सुरगिरि बुधत्वं प्रथयता,
प्रक्लृप्तं साहित्यं भुवि तदमितं तत्रभवता

३५३

समाजे, साहित्ये, श्रुतिसमुदये च स्मृतिगणे
पुराणे, चैतिह्ये सुबहु लिखितं दर्शनचये
इतीमे विद्वांसोऽभिदधति, परं यत्प्रकथितं
तदासिन्धोरद्धाऽऽहिमगिरिमभूल्लोकविदितम्

३५४

अहङ्कारो वाचामहह ! विदुषां कश्चन मदो-
ऽभिमानो विप्राणां गुरुवर ! स गर्वः स्थितिमताम्
कवीन्द्राणां दर्पः, स्मय इह सतामद्य विगतो
गते दिव्यं धाम ध्रुवमपुनरावर्ति भवति

३५५

नवीनानुत्साहैरिह सबलयन्, प्रत्नपुरुषान्
यथायोग्यं नूत्नं प्रति च वलयन् हन्त बलवान्
स विद्वान् अस्माकं गुरुगुरुगुरुः क्वापि परमां
प्रतिष्ठामद्याप्तुं गत इति न खेदस्य विषयः

गिरिधरतरणिः

[विद्यावाचस्पतयः श्रीमन्तः शशिधरशास्त्रिणः, चण्डीगढ़]

३५६

जगति विबोधं जनयन्, घन–विपदं प्रतिपदं दलयन्
विहरतु चित्रगवीको गिरिधर–तरणिर्मनो नभसि

३५७

कुन्देन्दुगौरवर्णं लोके महसां महीयसां शरणम्
कमलाभ-मृदुलचरणं गिरिधरचरणं समाश्रये शरणम्

३५८

साङ्गोपाङ्गरहस्या लोकोद्धारोल्लसत्करुणाः
तनुमेकामापन्ना विरेजिरे ननु चतुर्वेदाः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

३५९

प्रोद्भूतसरिल्लेखो गुणमणिखनिधृक् सुगाङ्गसुषमाढ्यः
अचलेन्द्रोऽर्च्यो हिमभाः यस्माद्रत्नाकरो जातः

३६०

मधुसूदनवक्त्राब्जाज्जयति परं जाह्नवी जाता
जयतितरां च तयाद्रं:कोऽप्यनिलो, येन काश्यपी पूता

३६१

वाचस्पतिर्गिरिधरो विबुधेन्द्रः कालिका-कान्तः
सारस्वतो विभूमा—वैराज्यमिवाश्रितः प्रबभौ

३६२

आस्तिकनास्तिकनव्य-प्राच्याखिलमतिविरोधविधुरेऽपि
नाम्न्येवाऽऽस्तविरोधो गिरिमधुधारामयस्य तव

३६३

'गिरि धरति' सर्वसारं निगमागमगं गिरिश्च यो धरति
धर्मं प्रत्नगरिष्ठं, गिरिधर इति सोऽञ्जसा प्रथितः

३६४

दुस्तर्कंलयज्जलदस्तोमाद् गां गोजुषश्चैव
परिपालयन्नपीन्द्रं व्यजेष्ट ही ! गिरिधरः कोऽपि

३६५

सारस्वतवर्यायोपहृतः सद्भक्तिभावितेन हृदा
सारस्वतोऽञ्जलिस्त्वां दीपो रविमिव विमोदयतु

३६६

उद्धूतधर्मपद्माकण्टककोलस्य बोधलीलस्य
पाद्यतया पद-पद्मे पद्याञ्जलिरयमुरीकार्यः

सारस्वतक्रतुकरं सततं स्मरामः

[श्री पं० रतिनाथझा महोदयाः; वाराणसी]

३६७

विद्वन्मिलिन्दनमनीयमरन्दविन्दुशोभास्पदं च सरसोऽपि भुवो विभूतिम्
वन्द्याभिवन्दितसनातनधर्मलक्ष्म्या लीलालयं किमपि जङ्गमपद्ममीडे

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

३६८

या भारतीकरसरोरुहसारणेन दिव्यं स्वनं जनयति श्रवणामृताख्यम्
तामानतोऽस्मि विपदामभिमानहन्त्रीं तन्त्रीमशेषसुखबीजविपञ्चिकायाः

३६९

शब्दाभिधेन किरणेन मनोहरेण भास्वद्वपुर्निहतसर्वविधान्धकारम्
अन्तर्निलीनतमसः प्रशमैकहेतु लोकोत्तरं किमपि धाम वयं स्मरामः

३७०

गीतोपदेशनिरतं निहताघवृन्दं धर्मप्रियं विततभारतभालरत्नम्
सारस्वतक्रतुकर कृतिनं च पुण्यश्लोकं गुरुं गिरिधर सततं स्मरामः

३७१

यैर्नैगमं चरमतत्त्वमपोदि यत्नाद्, यैरागमीयविधिरप्यनुशीलितश्च
तान्माननीयनिगमागमसम्प्रदायसेवाव्रतैकरसिकान् सततं स्मरामः

३७२

एकेन येन परिपोषमुपेत्य नानासंस्थाः स्थिराः समभवन्मुदितात्मवृत्त्या
कर्मण्यताप्रणयिनं, कृतिनं, विशुद्धं, पूजास्पदं बुधवरं तमनुस्मरामः

३७३

उच्चैः स्थितोऽपि विनतः, स्थविरोऽपि पूर्णः,
शक्तो युवाऽतिमृदुलः प्रखरोऽपि शश्वत्
आन्वीक्षिकीप्रणयवागपि काव्यविद्यास्निग्धः
पुराणरसिकोऽपि नवानुरक्तः

३७४

यश्चात्मसंसदि सदैव समर्चितोऽपि, नीराजितो विमतपण्डितमण्डलेऽपि
यः संस्कृतस्य नितरां समुपासकोऽपि हिन्द्या अपि प्रथितपोषक एव आसीत्

३७५

श्राद्धादिसाधनविधौ, प्रतिमार्चनायां यो वैरिसर्पविषशोषणदीक्षितोऽभूत्
तं वन्दनीयमधुसूदनमावहन्तं सत्यं भुजङ्गशमनं गरुडं स्मरामः

३७६

उत्सृज्य जीवनमतीव सुनिर्मलं यो वाग्वल्लरीमनुदिनं मुदितः सिषेच
तस्मै निसर्गमधुरोज्ज्वलवारिदाय श्रद्धाञ्जलिं समुदिता वयमर्पयामः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

३७७
नीचेन केनचन सन्निहितेन गर्वं, धौरादधाति यदि तर्हि वसुन्धरापि
जीवान्नितान्तसुमतीनपि शिक्षमाणं, त्वामेत्य किं नहि बिभर्तु महाभिमानम्

३७८
वाचस्पतिं विबुधमण्डलवन्दनीयं भूलोकगौरवविवर्धनहेतुभूतम्
दुर्बोधतत्वसरलीकरणप्रकारे श्रीमन्तमात्मविनयं सततं स्मरामः

प्राणान् जहौ परिपठन् शिवदत्तमन्त्रम्

[पं० रामरूपपाठकमहोदयाः, वाराणसी]

३७९
काशीपुरे शिवकरे शिवराजधान्यां गीतोपदेशकुशलो बहुशास्त्रवक्ता
भूपार्चितो मदनमोहनमाननीयः श्रीमान् बुधो गिरिधरो षडशीतिवर्षः

३८०
प्रवरमुनिसमानः सिद्धसंकल्पकार्यो, यतिगिरिधरशर्मा ब्रह्मरन्ध्रप्रयाणी
सकलनृपतिपूज्यः सर्वसौभाग्यशाली, बुधगुरुकवितुल्यः सर्वशास्त्रप्रवीणः

३८१
सर्वं विहाय मनसा यतिवद्विरक्तो दर्भे तिलेषु निवसन् परमे पवित्रे
गङ्गाजलं बहु पिबन् तुलसीदलाढ्यं प्राणान् जहौ परिपठन् शिवदत्तमन्त्रम्

३८२
स्मरहरपुरमध्ये धर्मसङ्घे पवित्रे, गुणभुजनखसङ्ख्ये विक्रमादित्यवर्षे
शुचिबहुलसुपक्षे सप्तमीशुक्रवारे, बुधगिरिधरशर्मा ब्रह्मलीनो बभूव

निधानं विद्यानाम्

[प० श्रीरामनारायणदत्तपाण्डेयमहोदयाः, वाराणसी]

३८३
ममोद्योगो नष्टो गिरिधरणहेतोरितिधिया
चिराद्वृष्टेरोजाद् विकलमभिजानञ्जगदिदम्
वशीकर्तुं शक्रं सकलसुरचक्रं नमयितुं
गतो हित्वा लोकं किमुत परलोकं गिरिधरः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

३८४

निधानं विद्यानां बुधजनसमाधाननिपुणः
सुमेधाः सद्वक्ता सहि समनुरक्ताखिलजनः
विशेषाणामेषां गतवति गुणानां त्वयि तथा
कथाशेषं प्राप्ता भुवि परिसमाप्ता गुणरतिः

गिरिधरशिशिरांशवे नतयः

[श्रीमन्तः पं० बटुकनाथशास्त्रिखिस्ते महोदयाः, वाराणसी]

३८५

उपदिष्टशास्त्रसरणिस्तरणिर्निगमागमाख्यपुञ्जस्य
शरणीकृतः सुधीन्द्रैर्गिरिधरशर्मा बुधाग्रणीर्जयति

३८६

अचतुरमिव चतुरास्यं मन्वाना वागुपेत्य यद्वदनम्
लीलासदनं व्यतनुत गिरिधरशर्म्मा स माननीयो नः

३८७

वैदिकविज्ञानविधौ द्योतित धिषणो वसुन्धराधिषणः
गम्भीरचारुभाषी गिरिधरविबुधः स पूजनीयो नः

३८८

जगदम्बिकाङ्घ्रिपङ्कजचिन्मयमकरन्दरोलम्बः
विद्यालतावलम्बः स्मरणीयो गिरिधराभिधो धीमान्

३८९

सन्तमसमन्तरुदितं शिष्यजनस्याशु संहरते
सन्त्वस्मै विशदरुचे गिरिधरशिशिरांशवे नतयः

३९०

यद्वदनपुण्यभूमेरुदित्वरी वाक्तरङ्गिणी लोकान्
पावयति स्म समस्तान् गिरिधरगीर्नायकः स महनीयः

३९१

प्रतिभावनीमयूरो वाग्देवीकर्णपूरो वा
शङ्कासमाधिशूरो गिरिधरसूरो विदिद्युते लोके

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

३९२

शशधरनिर्मलसुयशः क्षौमांशुकसंवृता भान्ति
दिक्सुन्दर्यो यस्मात् गिरिधरधीरः स वन्द्यतां विबुधैः

३९३

निजसुकृतविपाकप्राप्तसारस्वतश्रीपवितरणवदान्यः सर्वलोकैकमान्यः
गिरिधरबुधराजो मानसोपात्तपुष्पैरिह परिषदि विज्ञैरर्च्यते भक्तिसान्द्रैः

—विद्यावयोवृद्ध !—

[श्रीमन्तः शिवजीउपाध्यायमहाभागाः, वाराणसी]

३९४

व्याख्यानवाचस्पतिरार्णवाचो, बृहस्पतिस्तत्त्वविदां वरेण्यः
श्रीमांश्चतुर्वेदमहानुभावो, हा ! दैव, तद्रत्नमितः क्व नीतः

३९५

धिग्वत्सरं सम्प्रति वर्तमानं, मासं च तं धिक्धिगहो दिनं तत्
धिक् तां तिथिश्चाभ्यधिकं धिगेनं, कालं हि यो नो निधिमाजहार

३९६

विद्यावयोवृद्ध ! समृद्धवाचाऽऽनाचारनाशावनिबद्धकक्ष !
धर्मध्वजोत्तोलनलग्नचित्त ! त्वया विना हन्त ! वयं हता स्मः

दैवमपि नैव समीक्ष्यकारि

[श्रीमन्तः पं० कृष्णमोहनठक्कुरमहोदयाः, वाराणसी]

४९७

वृन्दारकेन्द्रपदवीं भवति प्रयाते वाचस्पतौ स्वतपसा महनीयकीर्ते,
को भारतस्य जनतासु कृतिप्रवृत्तौ विद्वत्सभां समभिसृत्य वदेत् प्रगल्भम्

४९८

रात्रिन्दिवं हि निगमागमसारभूतपीयूषवर्षिवचनेन विधाय तृप्तिम्
शिष्योपशिष्यनिवहस्य गतोऽधुना त्वं धिग्हन्त ! दैवमपि नैव समीक्ष्यकारि

४९९

कौतूहलाच्च प्रभवन्ति यथा हि बाला हार्दिक्यभावमनुसृत्य तथैव धीमन्
श्रद्धाञ्जलिं तव पुरस्तु वचोभिरेभिः सन्तर्पणाय भवतोऽद्य समर्पयामि

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

गिरिधर !

[श्रीमन्तः पं० व्रजनाथझामहोदयाः, वाराणसी]

४००

गिरिधर गिरिधरचरितं निभालयन् ब्रूहि गिरिवरं सम्यक्
भारतमयं हि पायात्पपौ स येनात्र संस्कृतं सततम्

४०१

गोवर्धनेन गोपान् जुगोप परितो यथा हरिस्तद्वत्
वरसदृशाशीर्वादेनाय सांस्कृतिकवाङ्मयं बहुशः

४०२

वाचं परीक्ष्य गिरिधरसेवालग्नां प्रसह्य पद्मापि
पद्मविभूषणपदवीं वितीर्य दुःखान्यपाकुरुते

४०३

इन्दिन्दिरै रमन्दं दिनकरकरबोधितैः सुपीतानि
इन्दीवराणि सततं नुवन्ति पूतेन गिरिधरं मनसा

शास्त्रार्थकण्ठीरवः

[श्रीमन्तः रामगोपालशास्त्रिणः, जयपुर]

४०४

विद्वन्मौलिमणे, तवैव वचसा प्रागल्भ्यमाश्रित्य स-
त्साहित्यं समुदेति, शाम्यति मिथो वैरं, रसा हृष्यति
हिन्दीसंस्कृतपत्रिकादितटिनी संवर्धते सन्ततं
किन्तु त्वां प्रविहाय साम्प्रतमिदं सर्वं कथं सेत्स्यति

४०५

नानाशिक्षणमन्दिरेषु विदुषां सम्मेलनेषु त्वया
तत्संस्थाभ्युदयाय कोविद मुदा सम्पादिताऽध्यक्षता
चातुर्यं सफलानुभूतिमथ ते दृष्ट्वा किमाखण्डल-
स्त्वामध्यक्षपदे सुधर्मणि गुरुं मान्यं न्ययुङ्क्ताधुना

४०६

धर्माचारविचारपालनचणः शास्त्रार्थकण्ठीरवो
नानादर्शनमर्मवित् गुणनिधिर्वन्दारुचूडामणिः

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

४०८

देवोवाक्समुपासको गिरिधरः शर्मा महादेशिको
वैकुण्ठं समुपाश्रितोऽद्य लभतां शान्ति गुरुः शाश्वतीम्

आसीन्मदीयः पिता

[डा॰ शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदः, वाराणसी]

४०९

वादिप्रौढतमिस्रखण्डनविधौ मार्तण्डबिम्बोदयः
काणादादिसमस्तशास्त्रगहनप्रोद्दामकण्ठीरवः
संसारव्यवहाररत्नजलधिर्वाक्सारिकापञ्जरः
क्षीराम्भोनिधिफेनपाण्डुरयशा आसीन्मदीयः पिता

(परिवर्तितम्)

४१०

सततं स्मृतौ स्फुरन्तं ज्योतिर्वलयाञ्चितं यशः पुञ्जम्
श्रीगिरिधरशर्माणं देवं प्रणमाम्यहं नम्रः

जग-विदित

[श्रीमान् बालारामजी साधु, जोधपुर]

छप्पय

४११

गिरिधर करपतसतत रखी ब्रज की ज्यों अच्युत
धर्म सनातन हेत रहे तत्पर ये तद्वत
शरद् उष्ण आघात मातृ भू हेत सहे नित
जस जाको लखि अमित गर्वमय भारत नितप्रत
त्रिभु कृपा विलोकहु सरलचित्त दिग्विजयी पंडित वलित
तव अर्पन कर धर्म हित गिरिधर शर्मा जगविदित

४१२

गिरिधर शर्मा में अहा यह गुन है गम्भीर
मेटत हैं परपीरपै भेंटत ना परपीर

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

वेदव्यास ऋषि थे

[श्री पं० राधाकान्त, वाराणसी]

(घनाक्षरी)

४१३

देश जाति धर्म के असीम उन्नायक थे
संस्कृति के सभ्यता के सच्चे प्रतीक थे
कठिन से कठिन विपदा आजाने पर भी
अपनी मर्यादा की छोडते न लीक थे
भाषण कला में अवतार थे सरस्वती के
ज्ञान विज्ञान की सदा ही देते भीख थे
श्रीगिरिधरशर्मा जी हमारे इस युग के
वेदव्यास ऋषि थे अथवा वाल्मीकि थे

गुरुचरितम्

[विद्याभास्करश्रीचन्द्रभानुशास्त्रिणः, हरिद्वारम्]

४१४

मनोवाक्कायसंतापाः प्रशमं यान्ति वीक्षिताः
यया दयार्द्रया नित्यं गौरवीं तां दृशं नुमः

४१५

यत्कृपाकणिकासक्ता सिक्ताऽपि गिरितां गता
तं विहाय समुन्नत्यै कं श्रिये वद संश्रये

४१६

यस्याननसहस्रेण शेषःशक्तो न भाषितुम्
कथमेकमुखस्तस्य गुणान् गणयितुं क्षमः

४१७

वाणी सुरपदी यत्र कालिन्दी लेखनी मता
उभयोर्मध्यगा नित्यं स्वान्तश्छन्ना सरस्वती

४१८

जङ्गमस्तीर्थराजोऽयं दर्शनस्पर्शनादिभिः
हरन् पापं दिशन् पुण्यं स्तोतुं वा केन शक्यते

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

४१६

तथाप्याजन्मपूकेन लब्धो यस्य कृपालवः
तेनैव मुखरा वाङ्मे जाता तदभि-वन्दने

साद्गुण्यम्

४२०

नवनीतोपमं चित्तं दृष्टिः सुरसरित्समाः। वशीकरणमन्त्रस्य तुलां वागधिरोहति ॥

४२१

प्रीतिश्चरणयोर्मातुः प्रवृत्तिः सत्यभाषणे। व्रते तपसि चोत्साहो दाढ्र्यमिन्द्रियनिग्रहे ॥

४२२

साम्मुख्यश्चिति वैमुख्यं यस्य वैषयिके सुखे। श्रद्धा शास्त्रसमादेशे शीलसच्चरितं हिते।

नामनिर्वचनम्

४२३

नासीदात्मसमस्तस्य सहाध्यायिषु कश्चन
अर्थानां यो गुरूक्तानां दैव्यां गिरिधरोऽभवत्

४२४

अतस्त्वन्वर्थनामाऽयं जातो गिरिधरो भुवि। यशोनाम्नैव देशेऽसौ ख्यात इत्येव तद्यशः॥

यशोवृद्धिः

४२५

असामान्यगुणैर्भ्रात्रा सहनाम्नाऽत्यवर्धत। एवमस्य यशोराशिर्वर्द्धमानो दिने-दिने ॥

४२६

मनोः पाणिप्रपन्नस्य लीलां मत्स्यस्य सोऽहरत्। दृष्ट्वैनं सर्वविद्यानां निधिं शङ्कररूपिणः

४२७

शङ्कराचार्यचरणाः पदं विद्यानिधिं ददुः। भूसमुद्रक्षितीशोऽयं महाराजेषु पञ्चमः ॥

४२८

गुरोर्गुणगणश्रेणीः सप्तद्वीपातिलङ्घिनीः
श्रुत्वा महामहोपाध्यायपदव्या व्यभूषयत्

४२९

'विद्यावाचस्पतिः सोऽयं व्याख्यावाचस्पतिस्तथा
अन्यैरपि पदैर्दिव्यैः शोभनैः समभाव्यत

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

संस्थाभिः सम्बन्धः

याभिर्याभिस्तु विद्यादिगुणसम्बन्धयोगतः । पादौ निपत्य संस्थाभिः पतित्वेन स्वयं वृतः
तासु तास्विह संस्थासु प्राणप्रदतया स्थितः । सौभाग्यमपुषत्तासां तैस्तैश्चारुगुणैरयम् ॥

ऋषिकुलसौभाग्यवृद्धिः

सैव त्वर्षिकुलं बालं भगीरथरथानुगा । सुताङ्कलालितं पूर्वं वात्सल्येन व्यलोकयत ॥

भागीरथीसुताप्यस्मै तं समर्प्य सुतं स्वयम्
निश्चिन्तेवाऽभवल्लोके योग्ययोगो ह्यचिन्तता
सोऽयं न्यासधिया तस्य नित्यं सार्वहितेक्षणः
तपः शौचसदाचारविद्यादिग्रहणे धियम्

अयुंक्त स च मेधावी बालक्रीडापराङ्मुखः । सद्यो जग्राह बालोऽपि हितं हारिगुरोर्वचः ।
तस्य स्वर्णे सुगन्धो हि मया प्रत्यक्षमीक्षितः । यादृशः स गुरुर्यस्याद्दै वाञ्छिष्योऽपि तादृशः
गुरुशिष्यसमायोगात्ते ते सद्गुणराशयः । स्पर्धयेवाभ्यवर्धन्त परस्पर जिगीषया ॥
स्पर्धाजिगीषे विद्वेषं विना यद्यपि नेक्षिते । सौहार्देन तु तत्रासीदुभयोस्तुल्ययोगिता ॥
अहो तत्सङ्गमाहात्म्यं विद्वेषं यत्र ते उभे । अहासिष्टामपि च्छन्नं धीरैरपि सुदुस्त्यजम् ॥
एवं मम गुरुस्तत्र ग्राहयन्नमितान् गुणान् । शिशूनप्यकरोत्तूर्णं वृद्धश्रद्धाधिकारिणः ॥
उभे सन्ध्ये जपन्तस्ते जुह्वन्तश्च हुताशनम् । वसाना अपि कौपीनान्याददानाः कमण्डलून्

दधानाः पीतवस्त्राणि बिभ्राणा काष्ठपादुकाः
भासमानाश्च मौञ्जीभिः पालाशैर्दण्डकैरपि

अन्तः प्रकाशा ज्ञानेन भ्राजन्तस्तेजसा बहिः । ब्रह्मचर्य्यञ्चरन्तस्ते भूयांसो वामना इव ।
विद्यां भिक्षितुमायाता गुरुं मन्येऽन्यदुर्लभम् । एवमस्मद्गुरुः साक्षाच्चतुर्वेदनिधिः स्वयम्
विद्यारत्नानि हस्ताभ्यामुभाभ्यां वितरन्नयम् । विश्रुतो भारते वर्षे ग्रहीतारः समागमन्
वङ्गाद् भोजकटं यावदाकाश्मीरकुमारिकम् । तत्र लीलाधरः सोऽपि भगवान् परमेश्वरः
वटुकेन सहैवासीत्काशीनाथो नरोत्तमः । एवं नैकविधै रूपनामभिः प्रेमवल्लभः
एकोऽपि व्यभवद्द्वेधा तपोभूयस्त्व हेतवे । नासीत्तन्नगरं यस्मान्नायाता ब्रह्मचारिणः
मुक्तामालेव सा रेजे गुरोः सद्गुणगुम्फिता । देशदेशान्तरायातद्विजबालक-पङ्क्तिका

[सावशेषम्]

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

स्वर्गीय महामहोपाध्याय पंडितगिरिधर शर्मा चतुर्वेदी जी

—द्वारा विरचित ग्रन्थ—

नाम	प्रकाशक	मूल्य
१- वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति	विहार राष्ट्र भाषा परिषद पटना	१२/-
२- पुराण परिशीलन	"	२०/-
३- वैदिक विज्ञान	लालबहादुर शास्त्री केन्द्री संस्कृत, विद्यापीठ, देहली (समाप्त)	५/-
४- प्रमेयपारिजातः [संस्कृत]	"	८/-
५- पुराण पारिजातः "	"	८/-
६- आत्मकथा और संस्मरण	शरदप्रकाशन, अस्सी वाराणसी (समाप्त)	१५/-
७- साहित्यिक निबन्ध	मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी (समाप्त)	३-५०/-
८- दर्शन अनुचिन्तन	भारतीयज्ञानपीठ, कलकत्ता	५/-
९- चतुर्वेदिसंस्कृतरचनावलिः [प्रथम भाग, संस्कृत]	चौखम्बा, वाराणसी	२०/-
१०- उपनिषद परिशीलन	मदनमोहन मालवीय शिक्षण संस्थान, भाटपाररानी देवरिया	८/-
११- वेदविज्ञानविन्दुः [संस्कृत]	सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय वाराणसी	३/-
१२- वैदिक वर्णव्यवस्था और श्राद्ध	किशोरविद्यानिकेतन, भदैनी, वाराणसी	२०/-
१३- भारतीय दर्शनों में आत्मा	"	३०/-
१४- भगवान् श्रीकृष्ण और शिवतत्व	"	२०/-
१५- प्रत्यालोचन	"	३०/-
१६- गीताव्याख्यानमाला प्रथमभाग	काशीहिन्दूविश्वविद्यालय, वाराणसी	१५/-
१७- " " द्वितीयभाग	"	७-५०/-
१८- " " तृतीयभाग	"	१२/-

Devavani Parishad New Delhi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust

१९- छवि की किरणें — श्रीगिरिधरसाहित्यिकशोधसंस्थान, वाराणसी १०/=
[हिन्दी संस्कृत कविता संग्रह]

सम्पादन

२०- वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी — मोतीलाल बनारसीदास, लाहौर
चार भाग (संस्कृत)

२१- निबन्धादर्शः — चौखम्बा वाराणसी ५/-

२२- 'संस्कृत रत्नाकरः' — अखिल भारतीय संस्कृतसाहित्यसम्मेलन, समाप्त
[मासिक पत्र का १९१४ से २० वर्ष पर्यन्त सम्पादन]

२३- 'ब्रह्मचारी' हिन्दी मासिक — ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, हरिद्वार (समाप्त)
[१९१५ से १० वर्षं सम्पादन]

२४ वैष्णवधर्म पताका (हिन्दी मासिक
पत्र का २ वर्ष सम्पादन)

२५- चतुर्वेदी
[हिन्दी मासिक पत्र का ४ वर्ष सम्पादन] — अखिल भारतीय चतुर्वेदी महासभा (समाप्त)

व्याख्या—

२६- ब्रह्मसिद्धान्त (संस्कृत) — काशीहिन्दूविश्वविद्यालय वाराणसी १२/-

२७- महर्षिकुलवैभवम् — राजस्थानपुरातत्त्वमन्दिर जोधपुर
(हिन्दी तथा संस्कृत व्याख्या)

२८- महाकाव्यसंग्रहः (संस्कृत) — मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास, लाहौर (समाप्त)

सम्पादित एवं प्रकाशनार्थ प्रस्तत

१- पुराणविद्या (संस्कृत)
२- भारतीय दर्शन परिशीलन (हिन्दी)
३- प्राचीन शब्दशास्त्र और उसके आचार्य (हिन्दी)
४- भारतीय वर्णव्यवस्था (हिन्दी)
५- पितृतत्त्व और श्राद्ध (हिन्दी)
६- देव और ऋषि (हिन्दी)
७- संस्कृतमहाकाव्यपरिशीलनहिन्दी
८- स्मृतिपरिशीलन (हिन्दी)
९- पत्र व्यवहार संग्रह
१०- प्रत्यभिज्ञा-तन्त्र-परिशीलन
११- विद्यावाचस्पति श्री ओझाजी
(व्यक्तित्व और कृतित्व)
१२- आत्मकथा (पुनर्मुद्रणार्थ प्रस्तुत)

संपर्क—

डा० शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदी
साहित्य विभाग. प्राच्यविद्यासंकाय
आवास B 3/1 FF ल० दा० गैस्ट हाउस के पीछे,
का० हि० वि० वि० वाराणसी-५

Devavani Parishad New Delhi